जन जागृति के प्रणेता युग मनीषी

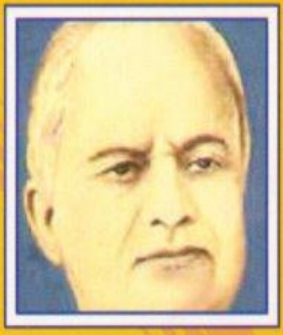

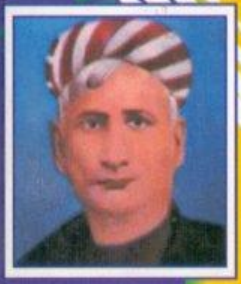

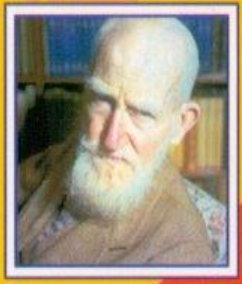

-श्रीराम शर्मा आचार्य

जन जागृति के प्रणेता युग मनीषी

लेखक
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

पुनरावृत्ति सन् २०१०

मूल्य : १३.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

लेखक
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् २०१०

मुद्रक
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-३
फोन (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राष्ट्रभाषा हिंदी के वरद् पुत्र
महावीर प्रसाद द्विवेदी

कामना मानव मन की एक सहज स्वाभाविक वृत्ति है। यही वह वृत्ति है जो मनुष्य को निरंतर कर्मशील बनाए रखती है। यों लौकिक कामनाएँ तो हर व्यक्ति करता है पर पारमार्थिक, पारलौकिक या 'बहुजन हिताय बहुजनसुखाय' के लिए अपनी योग्यता, प्रतिभा व शक्ति को नियोजित करते हुए एक महान ध्येय को पा लेने की दैवी अभिलाषाएँ भी कइयों के मन में उठा करती हैं। कुछ व्यक्ति उन भावनाओं,अभिलाषाओं को पूर्ण नहीं कर पाते और कुछ पूर्ण कर लेते हैं। इसके पीछे उन लोगों की व्यावहारिक सूझ-बूझ व ध्येयनिष्ठा की प्रखरता जुड़ी रहती है। कोई सामान्य जन अपनी सीमित सामर्थ्य में कितना बड़ा काम कर सकता है—इसके अनुपम उदाहरण आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को पूरी तरह निभाते हुए भी आचार्य वर ने राष्ट्रभाषा हिंदी के उन्नयन में जो योगदान दिया उसे सभी जानते हैं। उनका काल ही हिंदी साहित्य के इतिहास में द्विवेदी युग के नाम से जाना जाता है।

हिंदी के वरद् पुत्रों में प्रतिभाशाली तो कई हुए हैं। उन प्रतिभाओं का सदुपयोग करने वाले भी अनेक हुए हैं। किंतु जहाँ प्रश्न आता है किसी ध्येय को लेकर श्रम की उपलब्धि—दैवी संपदा के सहारे जिन लोगों ने अपने आप में प्रतिभा का सृजन, संवर्द्धन किया, ऐसे विरले ही मिलेंगे। उन्हीं में से एक महावीर प्रसाद द्विवेदी भी हैं। स्वयं आचार्य जी ने अपने संबंध में कहा है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''मैं एक ऐसे देहाती का एकमात्र आत्मज हूँ, जिसका मासिक वेतन दस रुपए था। अपने गाँव के देहाती मदरसे में थोड़ी उर्दू और घर पर थोड़ी सी संस्कृत पढ़कर तेरह वर्ष की उम्र में मैं अपने गाँव से ३६ मील दूर रायबरेली के जिला स्कूल में अँगरेजी पढ़ने गया। मैं आटा-दाल घर से पीठ पर लादकर ले जाया करता था। दो आने महीने की फीस देता था। रोटी बनाना जब मुझे नहीं आता था तो पकती दाल में ही आटे के पेड़े या टिकियाएँ बनाकर डाल देता था। यही मेरे उदर देव की पूजा का साधन था। संस्कृत भाषा उस समय वैसी ही अछूत समझी जाती थी जैसे निंबूदरी ब्राह्मणों में वहाँ की शुद्ध जातियाँ। विवश होकर मैं अँगरेजी और फारसी पढ़ा करता था। एक वर्ष किसी तरह वहाँ काटा फिर पुरवा, फतेपुर और उन्नाव के स्कूलों में चार वर्ष काटे। कौटुंबिक दुरवस्था के कारण मैं उससे आगे न बढ़ सका। मेरी स्कूली शिक्षा वहीं समाप्त हो गई।''

एक साल अजमेर में पंद्रह रुपए महीने पर नौकरी करके पिता के पास पहुँचा और तार का काम सीखकर जी० आई० पी० रेलवे में बीस रुपए महीना वेतन पर काम करने लगा।

उनके इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी पारिवारिक स्थिति कैसी थी और उनकी शिक्षा कहाँ तक हो सकी? यह उनके अध्यवसाय का ही सुफल था कि वे बीस रुपया महीना से आरंभ करके दो सौ रुपए महीना के अफसर बने। उस समय रुपए की कीमत आज की अपेक्षा दसियों गुना अधिक थी। एक भारतीय औसत स्तर के अफसर को इतना ही वेतन मिलता था। यह आज के तीन चार हजार से कम नहीं था। यह वेतन एक सामान्य आर्थिक स्तर के परिवार में उत्पन्न होने वाले व्यक्ति और उसके परिवार के लिए कम महत्त्व की बात नहीं थी। इस उच्च पद को त्यागकर उन्होंने अब तक करते आए काम से नितांत भिन्न सरस्वती पत्रिका के संपादन का काम बीस रुपया मासिक वेतन पर स्वीकार किया। इस पत्रिका के स्तर और सामग्री को उन्होंने श्रम और लगन के साथ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इतना बढ़ाया कि सरस्वती हिंदीभाषियों के लिए ज्ञानवर्द्धन और अहिंदीभाषियों के लिए हिंदी सीखने का माध्यम बन गई। हिंदी के मूर्द्धन्य कवि निराला भी सरस्वती के पुराने अंकों के सहारे हिंदी सीखे थे।

वह दिन सत्य ही राष्ट्रभाषा हिंदी और उसकी संतति के लिए बड़े ही सौभाग्य का दिन था जिस दिन आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने दौ सौ रुपए माहवार की सरकारी नौकरी को छोड़कर बीस रुपया मासिक की सरस्वती की संपादकी की। पर वह दिन विकट और साहसपूर्ण रहा होगा। इसका कारण भी कम रोमांचक, प्रेरक और मार्मिक नहीं था।

लार्ड कर्जन के समय की बात है। द्विवेदी जी की नियुक्ति उन दिनों झाँसी में थी। वे डिस्ट्रिक्ट ट्रैफिक सुपरिण्टेडेण्ट महोदय के मातहत काम करते थे। डिस्ट्रिक्ट सुररिण्टेडेण्ट साहब की रातें या तो बंगले पर या क्लब में मौज मजा करने में ही बीतती थीं और उनका काम करना पड़ता था द्विवेदी जी को। वे रात को भी अपने क्वार्टर पर आए तारों का जवाब दिया करते थे।

बचपन में भारतीय भाषाओं की दुर्दशा की पीड़ा झेलने वाले द्विवेदी जी युवावस्था में भारतवासियों की दुर्दशा की पीड़ा को भी स्वयं भोग रहे थे। साहब का काम करें वे और वेतन लें गोरे साहब, कैसा अन्याय था यह। इस अन्याय को वे अधिक दिनों तक सहन नहीं कर सके। एक बार ऐसा प्रसंग आया कि उन्हें ऊपर से आदेश हुआ कि आफिस के इतने कर्मचारी अमुक काम करने के लिए साथ लेकर हाजिर हों। वे स्वयं अन्याय सह लेते थे यह एक बात थी पर दूसरों पर अन्याय करना यह दूसरी बात थी, जो द्विवेदी जी को कभी स्वीकार नहीं थी। उन्होंने साहब से नम्र शब्दों में कहा— ''आपके आदेश से उनको अवगत करा देने का काम तो मैं कर दूँगा लेकिन यह करना तो मेरे वश में नहीं है कि मैं उन्हें समय से पूर्व आफिस आने के लिए विवश करूँ।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गोरे अधिकारी को अपने अधीन काम करने वाले भारतीय कर्मचारी की यह बात बहुत बुरी लगी। उसने दबाव डाला। बात बढ़ती गई और द्विवेदी जी ने अपने उस पद से इस्तीफा दे दिया।

द्विवेदी जी मानते थे कि प्रतिभा पैदा भी की जा सकती है। हिंदी जगत के कई साहित्यकार यह मानते हैं कि द्विवेदी जी की प्रतिभा जन्मजात नहीं स्वनिर्मित है। अँगरेजी में एक कहावत है—"प्रतिभा नब्बे प्रतिशत परिश्रमशीलता दस प्रतिशत स्वाभाविक स्फूर्ति के संयोग का नाम है।" द्विवेदी जी इस कहावत की सत्यता के सटीक उदाहरण थे। वे अपने श्रम और ध्येय निष्ठा के बल पर प्रतिभावान ही नहीं प्रतिभावानों के जनक बने थे। उनके ऋण से आज का हिंदी साहित्यकार एवं हिंदी प्रेमी ऋणी हैं और आने वाली पीढ़ियाँ भी।

उन्होंने कितने ही साहित्यकारों का निर्माण किया। अपनी पत्रिका के माध्यम से उन्होंने हिंदी का वह सुंदर भव्य आकर्षक और समर्थ स्वरूप भारतीय जनता के सामने रखा, जिसे देखकर लोगों में हिंदी सीखने की उमंग और उत्साह उत्पन्न हुआ। उनके समय को द्विवेदी युग इसीलिए कहा जाता है।

एक व्यक्ति अपने जीवन में और अपनी सामान्य सी सामर्थ्य में अपने परिवार के पालन-पोषण आदि, नाते-रिश्तेदारों के प्रति लगे दायित्वों को निभाता हुआ भी समाज की कितनी सेवा कर सकता है—यह उनके जीवन में स्पष्ट देखा जा सकता है। व्यक्ति के पास जो धन और शारीरिक, मानसिक सामर्थ्य है उसी का सदुपयोग सूझ-बूझ से किया जाए तो परिणाम कितना आश्चर्यजनक होता है।

सरस्वती का संपादन भी वे जिस श्रम और निष्ठा से करते थे उसे देखते हुए तो उसके अतिरिक्त कोई दूसरा काम कर पाना हमें उनके लिए असंभव सा लगता है, पर उन्होंने और भी कई ऐसे कार्य किए हैं, जो यह बताते हैं कि व्यक्ति कुछ करना चाहे तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसके लिए समय की कभी कमी रहती नहीं। यों तो उनकी हिंदी सेवा की बगिया महक ही रही है। उन्होंने जो आम का पेड़ लगाया है वह हमारी आने वाली पीढ़ियों को अमृत फल देता ही रहेगा। उन्हें आम खाने का भी बड़ा शौक था और लगाने का भी। हिंदी साहित्यकारों के रूप में कितने ही आम वृक्ष आरोपित पल्लवित, पुष्पित करने के साथ ही उन्होंने आम की बगिया भी लगाई थी। उन्होंने पचास-साठ पेड़ अपने हाथ से लगाए थे। उनके सिंचन, रक्षण, संवर्द्धन के लिए वे नित्य अपनी इस बगिया का निरीक्षण किया करते थे। सायंकाल में नियमित रूप से अपनी आम वाटिका में घूमते हुए यही सब देखा करते थे।

अपनी साहित्यिक प्रतिभा को उन्होंने जिस प्रकार हिंदी के उन्नयन में लगाया था, उसी प्रकार उन्होंने अपने धन का भी पूरी तरह सदुपयोग किया था। उनकी मितव्ययता जितनी सराहनीय और अनुकरणीय है, उनकी उदारता भी कम अनुकरणीय नहीं है। मितव्ययी इसीलिए थे कि उदारता अपनाकर एक-एक पैसे का सदुपयोग हो इसलिए वे एक-एक पैसे का हिसाब रखा करते थे।

उन्होंने सर्वप्रथम पंद्रह रुपए माहवार की नौकरी की थी। उसमें आसानी से उनका गुजारा हो जाता था। उनमें से भी पाँच रुपए बचा लिया करते थे। आगे से वेतन बढ़ता रहा पर उन्होंने वेतन के साथ अपना घर खरच नहीं बढ़ाया था। उनकी इस सूझ-बूझ का यह शुभ फल हुआ था कि उन्हें दो सौ रुपए की नौकरी छोड़कर बीस रुपए माहवार की लोक सेवा से मिलने वाली साधारण-सी वृत्ति को स्वीकार करने में तनिक भी कठिनाई अनुभव नहीं हुई। उनकी यह सूझ-बूझ निश्चय ही अनुकरणीय है।

उन्होंने अपने एक साहित्यिक मित्र को एक निजी पत्र में लिखा था—''१७ वर्ष की आयु में मैंने १५ रुपए मासिक पर रेलवे में नौकरी आरंभ की। जब छोड़ी तब मुझे १५० रुपया वेतन और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

५० रुपए अलाउंस कुल दो सौ रुपए मिलते थे। अठारह वर्ष तक सरस्वती में काम किया। बीस रुपए से आरंभ करके वे १५० रुपए मासिक तक पहुँचे थे। छोड़ने पर पचास रुपए माहवार पेंशन मिलती थी।.....'' इसी आय में उन्होंने अपने परिवार का पालन-पोषण करते हुए कितने ही निर्धन मेधावी छात्रों को आर्थिक सहायता दी। कितनी ही कन्याओं के विवाह कराए, विधवाओं को सहायता देकर माता की इच्छाएँ पूरी कीं। इसके पश्चात भी उन्होंने हजारों रुपए काशी हिंदू विश्वविद्यालय को दान कर दिए।

उन्होंने एक पैसा भी हराम का नहीं लिया और जो कुछ कमाया उसमें से एक पैसा अपने पर व्यर्थ खरच नहीं किया एक ट्रस्टी की तरह वे उस पैसे के रक्षक भर रहे।

द्विवेदी जी अपनी पत्नी को बहुत मानते थे। वे कहा करते थे—''मुझे यदि इस देवी का सहयोग-संरक्षण नहीं मिलता तो यह संभव नहीं कि मैं हिंदी की इतनी सेवा कर पाता। घर का मोर्चा यदि उन्होंने इतनी तत्परता व सूझ-बूझ से न सँभाला होता तो मेरे लिए निश्चिंत होकर इतना कुछ कर पाना संभव नहीं था।'' उन्होंने पत्नी के प्रति इस प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिए अपने गाँव में एक स्मृति मंदिर का निर्माण भी कराया।

हिंदी के प्रति उनकी श्रद्धा भक्ति व समर्पण अनूठा ही था। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने जैसी सामर्थ्य प्रदान करने में उनका जो योगदान रहा वह अनूठा है। आज हिंदी को वैज्ञानिक राष्ट्रभाषा का पद भले ही मिल गया हो, पर उसे सच्चे अर्थों में उस पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए अभी कितने ही हिंदीसेवियों को उन्हीं की तरह ध्येयनिष्ठ और कर्मनिष्ठ बनाने की आवश्यकता है।

द्विवेदी जी महान हिंदीसेवी ही नहीं महामानव भी थे। उनका जीवन इस बात का अनूठा उदाहरण है कि मनुष्य चाहे तो वह सामान्य स्थिति में रहता हुआ भी महान कार्य करके महान बन सकता है। ▣

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय संस्कृति के आख्याता
मैथिलीशरण गुप्त

भारतीय जनता की नसों में उस समय एक नया रक्त उबल रहा था। हर कोई कृत संकल्प था इस बात के लिए कि किसी न किसी प्रकार अँगरेजों को भारत से खदेड़ दिया जाए। उधर अँगरेजी सत्ता संगीनें तानें खड़ी थी। गिरफ्तारियों पर गिरफ्तारियाँ हो रही थीं। कहा नहीं जा सकता था कि कौन, कब सरकारी पुलिस का मेहमान बन जाए। ऐसे वातावरण में लोग एक स्वर से गाने लगे—'भगवान भारतवर्ष में गूँजें हमारी भारती'। अँगरेज अधिकारियों ने अनुभव किया यह मंत्र सर्वत्र व्याप्त होता जा रहा है। लोग गीत गा रहे हैं—

मानस भवन में आर्यजन, जिसकी उतारें आरती।
भगवान भारतवर्ष में, गूँजे हमारी भारती॥

इस मंत्र के द्रष्टा की खोजबीन हुई तो पता चला कि इसका प्रथम गान करने वाले हैं—मैथिलीशरण गुप्त। गुप्तजी तब राष्ट्रीय आंदोलनों में भी खुलकर भाग लिया करते थे। उक्त पद में निहित भावनाओं को उन्होंने और भी मुखरित स्वर दिया था अपनी प्रमुख कृति 'भारत-भारती' में। तब 'भारत भारती' ने देश के आबाल वृद्ध नागरिकों में राष्ट्र प्रेम की भावनाएँ जगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। कहा जाता है कि १९२१ से १९४० तक 'भारत भारती' ने जो काम किया, जनमानस पर जो प्रभाव छोड़ा उसकी गुरुता को इससे पूर्व महाकवि भूषण ही छू पाए थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अँगरेजी सरकार को जब यह पता चला कि इस पद्य के गायक और उस भाव कृति के प्रधान रचयिता हैं—मैथिली शरण गुप्त, तो उन्होंने गुप्तजी को तुरंत बंदी बना लेने का निश्चय किया था। अत्याचार और अन्याय के पास स्वयं को जीवित रखने का एक ही उपाय रहा है—सदा दमन। जो यदि राजसत्ता हो तो गिरफ्तारी तथा कानून से और दूसरा हो तो हिंसा के माध्यम से अपना काम करता है।

एक दिन ब्रिटिश पुलिस ने मैथिली शरण गुप्त को उनके अग्रज रामकिशोर जी सहित बंदी बना लिया। तब तक गुप्त जी को राष्ट्रकवि के रूप में जाना जाने लगा था। सर्वप्रथम 'भारत भारती' पढ़कर महात्मा गांधी ने उन्हें इस विशेषण से संबोधित किया था। डॉ० राजेंद्र प्रसाद ने भी जन जागरण में 'भारत भारती' को अभूतपूर्व योगदान देने वाली कृति कहा था। राष्ट्रीय पुनर्जागरण में भारत-भारती महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी और जन-जन के हृदय में प्रवेश कर चुके थे राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त और इधर ब्रिटिश शासन ने उनके वर्चस्व और प्रभाव से परिचित होते हुए भी उनसे अमानुषी व्यवहार किया। गुप्तजी गिरफ्तार होने से कुछ दिनों पूर्व ही ज्वराक्रांत हुए थे। परिणामस्वरूप उनका शरीर काफी दुर्बल भी था।

घर से गिरफ्तार होकर जैसे ही वे जेल गए उन्हें भूख लगी और नाश्ते के लिए पूछा। हैड कांस्टेबिल ने बड़े रूखेपन से कहा—"अब वहीं पर मिलेगा ब्यालू तो उन्हें चिरगाँव—जहाँ कि वे गिरफ्तार किए थे—झाँसी से लगभग २० मील दूर है और वहाँ ले जाना भी किस प्रकार पैदल! एक तो ज्वराक्रांत शरीर—दूसरे अधेड़ावस्था, फिर भूखे पेट और इस पर भी पदयात्रा, लगता था पहले ही दौर में पुलिस वाले गुप्त जी से सारा बदला निकाल लेना चाहते थे। रखा तो उन्हें झाँसी में भी नहीं गया। वहाँ से सीधे आगरा भेज दिया गया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वैशाख का महीना था और संध्या का समय। झाँसी से आगरा लाकर जेल की अँधेरी कोठरी में ठूँस दिया गया। दोपहर की लपटें तो शांत हो चुकी थीं परंतु उन्हें बड़ी तेज प्यास लग रही थी। जेलर से पानी माँगा तो कोई उत्तर नहीं मिला। जैसे ही गुप्त जी ने अँधेरी कोठरी में प्रवेश किया द्वार बंद हो गए और दोनों भाई उस काल कोठरी में जमीन पर बैठ गए। बहुत देर तक जेल का ही कोई कर्मचारी टोंटीदार जलपात्र लेकर आया। उसने न कोई कोठरी का दरवाजा खोला और न ही कुछ कहा। सीधा आकर सींकचों के बाहर खड़ा हो गया। गुप्तजी समझ गए और उस व्यक्ति के पास जाकर अंजलि से पानी पीने लगे। वह सींखचों के बाहर से ही पानी पिलाता रहा।

इस प्रकार सात माह तक गुप्तजी अकल्पित घोर यातनाएँ सहते रहे। इन यातनाएँ को सहने के लिए जैसे वे पहले से ही तैयार होकर आए थे। इसीलिए उन्हें न तो किसी प्रकार का क्षोभ हुआ और न ही किसी प्रकार की वेदना का अनुभव। यही तो कारण था कि वे उस अँधेरी कोठरी में भी साहित्य साधना करते रहे। उनकी एक प्रधान कृति 'कुणाल गीत' का आरंभ यहीं हुआ और उसका अधिकांश भाग जेल में ही लिखा गया। महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर और स्वराज्य की योजना में ही भारत का कल्याण होता देखकर वे सूत्रयज्ञ के लिए भी समय निकालते रहते।

सात माह बीत जाने के बाद उनके कुछ सरकारी मित्रों ने उत्तर प्रदेश के गवर्नर से अनुरोध किया। परिणामस्वरूप वे कारामुक्त कर दिए गए। जेल में उन्होंने प्रवेश किया था बुंदेलखंडी पगड़ी और अंगरखा पहनकर, परंतु वहाँ से लौटे तो कुरता, वंडी, धोती और टोपी पहनकर। पहले उन्होंने बुंदेलखंडी जीवन को उतारा था अपने व्यक्तित्व में परंतु जब वे कारावास से बाहर आए तो उन्होंने अपने आपको अखंड भारतीयता के रंग में रंग लिया था। एक साथी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ने उनसे हँसी में कहा भी था.·····'गुप्तजी को पहले बच्चे देखते तो डर जाया करते थे (दाढ़ी के कारण) परंतु अब वे आपको प्यार करेंगे आपके पास आएँगे।'

'क्यों नहीं'—गुप्तजी ने भी इसका उत्तर विनोदपूर्वक देते हुए कहा था—''मैंने अब भारत की आत्मा से तादात्म्य जोड़ लिया है।'' सचमुच करारी तपिश ने गुप्तजी के कवि हृदय को तपाकर कुंदन बना दिया था। वे एक नई उमंग के साथ नए राष्ट्र की नई संस्कृति के निर्माण में संलग्न हुए थे। इस प्रकार कविता के माध्यम से देश काल पर छा जाने वाले मैथिलीशरण गुप्त का मूल व्यक्तित्व निर्माण की ओर अग्रसर हुआ था १९०४ में, तब उनकी सर्वप्रथम रचना सरस्वती में प्रकाशित हुई थी।

तब सरस्वती के संपादक थे—पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी। गुप्तजी उस समय केवल १८ वर्ष के थे। द्विवेदी जी की पारखी आँखों से गुप्तजी की प्रतिभा छिपी न रही। उन्होंने गुप्तजी को प्रोत्साहन देना आरंभ किया और गुप्तजी अपने साहित्यिक गुरु के मार्गदर्शन में काव्य साधना के पथ पर अग्रसर होते गए।

एक धर्मनिष्ठ परिवार में जन्म लेने तथा राष्ट्रीय वातावरण में पलने के कारण गुप्तजी का झुकाव सहज ही भारतीय संस्कृति की ओर हुआ। उनके पिताजी भगवान राम के निष्ठावान भक्त थे और रामचरित मानस उनका प्रिय धर्मग्रंथ था। पिता के संस्कार पुत्र में भी जन्मे और राम तथा रामकथा गुप्तजी का प्रिय विषय ही बन गई। यों वे विनयपूर्वक राम की उपासना तथा उनका भजन-पूजन भी करते रहते थे। परंतु उन्होंने रामकथा को सर्वथा एक नई दृष्टि से देखा इसी कारण रामचरित पर आधारित उनका महाकाव्य 'साकेत' तुलसीदास के रामचरित मानस से कई अर्थों में भिन्न है। साकेत में उन्होंने उन नारी पात्रों को विशेष रूप से उभारा है जिन पर तुलसी का अधिक ध्यान नहीं जा पाया। इसके कई कारण हो सकते थे। तुलकी की दृष्टि में राम पूर्ण ब्रह्म परात्पर ईश्वरीय सत्ता हैं, वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उनके परम उपास्य भी। उपास्य देव तो गुप्तजी के भी राम ही हैं परंतु उन्होंने रामकथा के पात्रों का मानवीय पक्ष भी कुशलतापूर्वक उभारा है। तुलसी की कुटिल कैकेयी–गुप्तजी की भोली और सीधी–सादी मातृ हृदय वत्सला नारी है। राम पर उसका स्नेह भरत से कहीं अधिक ही है। परंतु मंथरा ने अपने प्रयोजन के लिए कैकेयी के अंत:करण को जिस मनोवैज्ञानिक ढंग से छुआ वह सीधे हृदय को छू जाता है और विश्वसनीय लगता है।

राम के प्रति कैकेयी की धारणाएँ उस समय चरमराकर टूट जाती हैं, जब उसके हृदय में मंथरा की यह वाणी गूँजने लगती है।

भरत से सुत पर भी संदेह। बुलाया तक न उसे जो गेह॥

भरत और गुप्तजी की कैकेयी का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह तो नहीं कहा जा सकता कि तुलसी का दृष्टिकोण पक्षपात पूर्ण रहा है। इतना अवश्य मानना पड़ता है कि कोई भी सजीव साहित्यिक कृति देशकाल की परिस्थितियों से अछूती नहीं रह सकती। यही कारण है कि रामचरित मानस और साकेत के गठन में अंतर का। गुप्तजी ने अपनी काव्य कृतियों के माध्यम से राष्ट्रीयता, संस्कृति–प्रेम और उदारतावादी धर्मनिष्ठा का जो पोषण किया उसे देखकर वे अपने समय के अद्वितीय कवि और युगीन साहित्यकार ही कहे जा सकते हैं।

भारतीय साहित्य वाङ् मय में भारतीय जीवन दर्शन को नया कोण और नई दृष्टि देने में गुप्तजी समर्थ हुए हैं। तत्कालीन भारतीय नारी की दु:स्थिति को उन्होंने जिस मार्मिकता से चित्रित किया है। नारी समाज की दीन दुर्दशा को जिन सशक्त स्वरों में व्यक्त किया है, वह उनके युगद्रष्टा व्यक्तित्व का सहज ही परिचय देती है। उर्मिला, यशोधरा आदि ऐतिहासिक नारी पात्र अभी तक लगभग उपेक्षित से ही रहे हैं। परंतु उन्होंने इन पर स्वतंत्र कृतियाँ लिखकर भारतीय नारी की पीड़ा को इन शब्दों में वाणी दी—

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आँखों में पानी॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारत भारती, साकेत, यशोधरा और उर्मिला में जहाँ उन्होंने अतीत के गीत गाए हैं। वहीं नव जागरण का मंत्र भी साधा है। उन्होंने एक कर्मयोगी की भाँति भव्य समाज के नवसृजन का संदेश दिया। पृथ्वी पुत्र में उन्होंने संकेत दिया है कि ऊपर शून्य आकाश को निहारने का, बादलों के भरोसे बैठे रहने का समय अब गया। आज मनुष्य चातक बनकर चोंच खोलकर सामने बैठा रहे प्रतीक्षा करता हुआ तो उसका जीवित रहना संभव नहीं है। उसे तो धरती पर फैले हुए जल प्रवाहों को खेतों में उड़ेलना होगा। तब कहीं उसकी भाग्य लक्ष्मी प्रसन्न होगी और धरा फल-फूलों से लद जाएगी। अब समय ऐसा है कि इंद्र का भरोसा छोड़ दिया जाए और स्वयं के ही प्रयत्नों द्वारा गंगा को धरती पर लाया जाए।

नवनिर्माण और सृजन की प्रेरणा को गुप्तजी ने जीवन का एक उत्सव माना है। एक ऐसा उत्सव जो अपनी धरती पर मनाया जा रहा है। अपने ढंग से मनाया जाए तभी उसका आनंद उठाया जा सकता है, क्योंकि अपनी धरती और अपनी धारा के साथ जो अपनत्व जुड़ा हुआ है—वह निश्चय ही आत्म गौरव के साथ-साथ आत्मिक आनंद भी उपलब्ध कराता है। जीवन के अंतिम दिनों में वे स्वतंत्र भारत के संसद सदस्य रहे। भारत सरकार ने उनका सम्मान और मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए उन्हें राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया। उन्होंने कई उतार-चढ़ाव देखे; जीवन में समृद्धि, संपन्नता, यश, कीर्ति और प्रतिष्ठा से लेकर निंदा, उपेक्षा अपमान और विपन्नता तक। परंतु वे जीवन की प्रत्येक स्थिति में अविचलित, निर्भय और निर्द्वंद बने रहे। उनकी स्थिति प्रज्ञता को देखकर यह सहज ही जाना सकता है कि उनका जीवन तो उत्सव ही था और किसी ने उनकी बात सुनी न सुनी हो उन्होंने तो आत्मसात कर ही ली थी।

एक कवि की सबसे बड़ी यही विशेषता रहती है कि वह किसी को खुश करने के लिए नहीं अपनी आत्मा को संतुष्ट करने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के लिए लिखता है। दूसरों की प्रसन्नता या नाराजगी उसे प्रभावित नहीं करती है। उनका लक्ष्य तो रहता है आत्मपरितोष। इसलिए वाल्मीकि से लेकर व्यास, तुलसी और कबीर तक जितने भी महाकवि हुए हैं वे **स्वान्तः सुखाय** लिखते रहे हैं। स्वयं उन्होंने भी लिखा है—कला के लिए तो मुझे स्वान्तः सुखाय वाली बात ही उपर्युक्त जान पड़ती है।

११ दिसंबर १९६४ ई० को गुप्तजी का देहावसान हो गया। अठारह वर्ष की आयु से लेकर अठहत्तर वर्ष (साठ वर्ष) की आयु तक वे अनवरत लिखते रहे। सरस, सरल, शुद्ध-प्रांजल और प्रेरणाप्रद। गुप्तजी के समग्र काव्य का अध्ययन करने के बाद इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ता है कि उनका कवि हृदय एकता-समता में विश्वास रखते हुए एक आदर्श समाज की संरचना के लिए प्रयत्नशील रहा था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हिंदी साहित्य में मील के पत्थर

पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी

किसी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका के संपादन विभाग में कुछ कर्मचारियों की आवश्यकता थी। विज्ञापन निकाला गया तो कई एम० ए० और पी० एच-डी० के डिग्रीधारियों ने आवेदन किया। साक्षात्कार के लिए उन्हें जब बुलाया गया तो प्राय: सभी से एक प्रश्न पूछा। हालांकि योग्यता की परख के लिए और भी कई प्रश्न पूछे गए। परंतु उन सभी प्रश्नों के साथ यह प्रश्न भी अवश्य जुड़ा हुआ था। प्रश्न था—क्या आप 'उसने कहा था' के लेखक के विषय में कुछ जानते हैं।

जिन लोगों से पहली बार में ही प्रश्न पूछा गया और वे ठीक से उत्तर न दे पाए उन्हें तो ससम्मान वापस जाने के लिए कह दिया गया और जिनसे पहले कई प्रश्न पूछ लिए गए थे उनसे बाद में भी यही प्रश्न किया और जो इसका सही उत्तर नहीं दे पाए उन्हें भी विदा कर दिया गया। उन्हें विदा करने का कारण भी गलत नहीं कहा जा सकता क्योंकि जिस कहानी और जिस लेखक के संबंध में प्रश्न किया जा रहा था, वे दोनों ही हिंदी साहित्य में मील का पत्थर माने जाते हैं।

सन् १९१४ में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ा। इस युद्ध में ३६ देशों ने भाग लिया था। ब्रिटिश गवर्नमेंट की ओर लड़ने वाले देशों में एक भारत भी था। अँगरेज सरकार ने अपने हित में भारतीय जनशक्ति और सैन्यबल का तब भरपूर और यहाँ तक कि जबरन भी प्रयोग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किया। भारतीय सैनिकों ने इस युद्ध में जो कीर्तिमान स्थापित किया वह भारत में आज भी जन चर्चा का विषय बना हुआ है। उस समय तो हर नेता भारतीय वीरों का शौर्य पराक्रम देख-सुनकर यही कहते थे कि भारतीय जवान दुनिया भर में अद्वितीय, साहसी, पराक्रमी और शक्तिशाली हैं। युद्ध आरंभ होते ही भारतीय सैनिकों की यशोगाथा हर कहीं गाई जाने लगी थी और तभी १९१५ में हिंदी की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका सरस्वती में 'उसने कहा था' कहानी छपी थी। यह कहानी विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई थी।

प्रेम और कर्त्तव्य को केंद्र बनाकर लिखी गई इस कहानी ने हिंदी जगत में बड़ी हलचल मचा दी। शिल्प और कथावस्तु की दृष्टि ये यह हिंदी साहित्य में अनूठी कृति सिद्ध हुई और उद्देश्य तथा भावों को दृष्टि से भी बड़ी प्रेरणाप्रद। प्रेम और कर्त्तव्य के संबंध में प्राय: समझा जाता है कि वे दोनों भाव अलग-अलग हैं और यदाकदा एक ही बिंदु पर टकरा भी जाते हैं। परंतु गुलेरी जी ने इस कहानी में सिद्ध कर दिया है कि प्रेम और कर्त्तव्य अलग-अलग नहीं रहे हैं। बल्कि प्रेम शब्द तो इतना व्यापक है कि उसमें कर्त्तव्यनिष्ठा, वचन का पालन, सत्य, त्याग, वीरता आदि गुण सहज ही समा जाते हैं। जिस प्रेम के कारण लगता है कि कर्त्तव्य पालन में कोई बाधा खड़ी हो रही है। वह प्रेम, प्रेम नहीं शरीर के तल तक सीमित रहने वाला मोह मात्र है।

कहानी का आरंभ अमृतसर के बाजार से होता है। वहाँ एक किशोर और एक किशोरी संयोगजन्य परिस्थितियों में एकदूसरे से क्षण भर के लिए परिचित होते हैं। यही किशोर लहना सिंह कहानी का प्रमुख पात्र है। अपने हृदय में किशोरी के प्रति विशुद्ध प्रेम का अंकुर जन्मता पाता है। आगे चलकर लहनासिंह सेना में भरती हो जाता है और उसकी मानस प्रेयसी विवाह बंधन में बंध जाती है। लहनासिंह के साथ उसकी प्रेयसी का पति भी युद्ध में जाता है। और वह जानती है कि लहना के हृदय में मेरे प्रति अगाध प्रेम है—

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक बात कहती है। लहनासिंह दिए हुए वचन को पूरा करने के लिए—अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए—प्रेयसी की हित कामना के लिए जान की भी बाजी लगा देता है। इस छोटे से कथानक को गुलेरी जी ने जिस भाव प्रवण कुशलता के साथ कथासूत्र में पिरोया है—वह शैली बाद में हिंदी साहित्य की विशिष्ट पद्धति ही बन गई।

यह भी बड़े आश्चर्य की बात है कि गुलेरी जी के तीन ही प्रयास प्रकाश में आए। उन तीनों प्रयासों में से 'उसने कहा था' अंतिम प्रयास है। इसके बाद उनकी कोई कहानी नहीं छपी परंतु इस एक कहानी ने ही उन्हें जितनी ख्याति और प्रतिष्ठा प्रदान की वह यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि साहित्यिक प्रतिभा निखारने के लिए ढेरों ग्रंथ, रचनाएँ और कविता कहानियाँ लिखना कोई आवश्यक नहीं है। बेहतर है थोड़ी ही कृतियाँ लिखी जाएँ परंतु उनमें जीवंतता और सार्थकता हो। उनकी रचनाओं का संकलन गुलेरी ग्रंथ के नाम से भी प्रकाशित हुआ है। परंतु उसे देखते हुए भी नहीं कहा जा सकता उन्होंने अधिक कुछ लिखा है। गुलेरी ग्रंथ में कुल ३३ रचनाएँ संकलित हैं। इन रचनाओं में गुलेरी जी का व्यक्तित्व इतनी बुलंदगी से बोलता है कि लगता है हिंदी साहित्य को जीवन और प्राण देने में यह अकेला व्यक्ति ही सर्वप्रथम सफल हुआ है।

अपनी कुछेक रचनाओं के बल पर ही हिंदी साहित्य में अमर हो जाने वाले गुलेरी जी का जन्म १८८३ ई० में जयपुर के ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज हिमाचल प्रदेश कांगड़ा जिले के गुलेर नामक स्थान से चलकर जयपुर में ही आ बसे थे। पूर्वस्थान को अपने वंशनाम से जोड़कर उन्होंने अतीत को स्मरण रखने को परंपरा डाली थी शायद। गुलेरी जी के पिता शिवराम शास्त्री संस्कृत के प्रकांड पंडित, साहित्य मर्मज्ञ और ख्याति प्राप्त विद्वान व्यक्ति थे। उनकी विद्वत्ता और पांडित्य मात्र वाणी विलास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

या जीविकोपार्जन का ही साधन नहीं था बल्कि जो कुछ भी उन्होंने सीखा और समझा उसे जीवन तथा व्यवहार में उतारने के सिद्धांत पर उनका अधिक विश्वास था।

यही कारण था कि उन्होंने संतान को जन्म भर देना ही काफी नहीं समझा। सुसंतति के रूप में समाज को, विश्व को एक अनुपम उपहार देने में उनकी अधिक आस्था रही। शास्त्री जी ने बचपन से ही अपने पुत्र के व्यक्तित्व को प्रखर और उसे समुन्नत रूप देने की, सुविकसित करने की नीति अपनाई। बालक चंद्रधर प्राय: बात-बात में अपने पिता की नकल करता और पुस्तकें ग्रंथ उलट-पुलट करने में ज्यादा मशगूल रहता। पिताजी जब संस्कृत के ग्रंथों का पाठ करते तो वह बड़े ध्यान से सुना करता था। बाल सुलभ चपलता को भुलाकर एकाग्र चित्त सा बैठ जाता। धीरे-धीरे जब वे बड़े हुए तो पारिवारिक संस्कारों के फलस्वरूप संस्कृत की ओर उनक रुझान बढ़ा।

शास्त्री जी ने विद्याध्ययन के लिए बालक को अपने सान्निध्य में रखकर संस्कृत पढ़ाना ही ठीक समझा। उन्होंने संस्कृत की विधिवत शिक्षा चार-पाँच वर्ष की आयु में ही आरंभ कर दी और कुछ ही दिनों में चंद्रधर ने संस्कृत के तीन सौ श्लोक कंठस्थ कर लिए। क्रमश: इस भाषा और साहित्य का विधिवत शिक्षण देते हुए शास्त्री जी ने कुछ ही वर्षों में पाणिनी व्याकरण तथा अष्टाध्यायी भी पढ़ा दी। पिता की बुद्धिमत्ता और अपनी लगन के परिणामस्वरूप अल्पवय में ही चंद्रधर ने संस्कृत का अधिकाधिक ज्ञान अर्जित कर लिया। यहाँ तक कि उसी उम्र में उन्होंने एक बार 'भारत धर्म महामंडल' के संयोजकों तथा उपदेशकों के सामने संस्कृत में धारा प्रवाह भाषण देकर सबको चमत्कृत कर दिया था।

उस समय अंग्रेजी भाषा सरकारी कामकाज की तथा प्रतिष्ठित जनों की सामान्य भाषा थी। यह स्थिति तो आज भी है। लेकिन शास्त्री जी ने तात्कालिक दृष्टि से अपने पुत्र को इस भाषा का ज्ञान

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करवाना भी आवश्यक समझा। सन् १८९३ में जयपुर महाराज कॉलेज में प्रवेश दिलाकर शास्त्री ने अपने पुत्र को हर दृष्टि से योग्य बनाने की व्यवस्था की। बुद्धि और क्षमता का ठीक ढंग से समुचित विकास हो तो सफलता हर कहीं वाट जोहती है। थोड़े ही दिनों में गुलेरी जी अँगरेजी भलीभाँति पढ़ना-लिखना सीख गए। बाद में सन् १८९९ में उन्होंने प्रयाग विश्व विद्यालय में एंट्रेंस की परीक्षा में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। इस सफलता को सम्मानित करने के लिए जयपुर सरकार की ओर से उन्हें स्वर्णपदक भी मिला था।

बौद्धिक चेतना के विकास पथ पर अग्रसर होते हुए गुलेरी जी धार्मिक कार्यों में श्रद्धा के साथ भाग लेने लगे थे। इस संबंध में उनके विचार बड़े व्यावहारिक होते थे। सन् १९०० में कुछ लोग उनके पास एक मंदिर के निर्माण की योजना लेकर आए। तब वे एक दूसरे मंदिर के जीर्णोद्धार में लगे हुए थे। गुलेरी जी ने नए मंदिर की योजना वालों को परामर्श दिया कि नया मंदिर बनवाने की अपेक्षा बेहतर है कि पुराने मंदिर जिनकी मरम्मत और देखभाल जरूरी है, उनमें अपना धन व समय लगाया जाए। कई उदाहरण देकर उन्होंने अपनी बात की पुष्टि की और उन लोगों को मनाकर दूसरे मंदिर के जीर्णोद्धार कार्य में लगा दिया। उस समय पुनर्निर्माण कार्य में दो विदेशी विशेषज्ञों का सहयोग भी प्राप्त किया था उन्होंने। अहर्निश इस कार्य में लगे रहने के बावजूद भी उन्होंने अविराम साहित्य साधना की, कई-कई बार तो उन्हें भोजन करने तक का समय नहीं मिलता था।

फिर भी समय निकालकर उन्होंने एक संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद किया। सम्राट सिद्धांत का अनुवाद कार्य संपन्न करने के साथ-साथ उन्होंने जयपुर आर्ट औब्जरवेटरी एण्ड इण्टर्स नामक पुस्तक का प्रणयन भी किया। गुलेरी जी ने साहित्य क्षेत्र में तो पदार्पण कर लिया था परंतु अध्ययन का क्रम उन्होंने अभी नहीं तोड़ा था। यद्यपि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे डिग्री प्राप्त करने के लिए नहीं पढ़ रहे थे। उनका लक्ष्य तो ज्ञानार्जन और योग्यता का विकास ही था और यह उद्देश्य समुचित ढंग से प्राप्त भी होता जा रहा था।

सन् १९०४ में जयपुर दरबार ने उनकी योग्यता और प्रतिभा से प्रभावित होकर खेतड़ी में नृपति जयसिंह बहादुर के शिक्षक पद पर नियुक्ति कर दी। परंतु वे कुछ वर्ष ही यह काम कर सके। १९१६ में मेयो कॉलेज में संस्कृत विभाग में प्राध्यापक की आवश्यकता हुई। इस पद के लिए गुलेरी जी को निमंत्रित किया गया। चूँकि जयपुर के सामंत पुत्रों को पढ़ाने की अपेक्षा उन्हें वहाँ बहुत कम सुविधाएँ मिलने वाली थीं, फिर भी उपार्जित विद्या और ज्ञान का लाभ अधिक से अधिक लोगों को मिले इसके लिए उन्होंने मेयो कॉलेज का वह पद सहर्ष स्वीकार कर लिया और जयपुर दरबार की सेवाओं से मुक्त हो गए।

सन् १९२० में उन्हें पंडित मदनमोहन मालवीय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में मनींद्र चंद्र नंदी स्कालर तथा प्राच्य विद्या और धर्म विभाग के प्रधान पद पर कार्य करने के लिए निमंत्रित किया। सैंकड़ों विद्वान उन दिनों मालवीय जी के साथ काम करने का अवसर तलाशते रहते थे और फिर भी निराश हो जाते। गुलेरी जी फिर इस अयाचित अवसर को क्यों छोड़ने लगे? उन्होंने मालवीय जी का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और उक्त विभागों के पद पर प्रतिष्ठित हो गए। गुलेरी जी ने वैदिक—संस्कृत, पाली, प्राकृत, अप्रभ्रंश, बंगाली, मराठी, गुजराती, अँगरेजी, हिंदी, लैटिन, जर्मन तथा फ्रैंच भाषाओं को भी इस अवधि में अच्छी तरह सीख लिया था।

दिनभर व्यस्त दिनचर्या के बाद भी इतने अधिक विषयों पर अधिकार करना है तो आश्चर्य का क्या विषय। परंतु यह भी सच है कि यह असंभव नहीं है। वस्तुतः मनुष्य जीवन और शरीर इतनी अद्भुत क्षमताओं से भरा पड़ा है कि उनका एक अंश भी जाग्रत कर लिया जाए तो बड़ी सफलताएँ मिल सकती हैं। गुलेरी जी ने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठोर, श्रम, नियमानुवर्तिता और समय की पाबंदी से उन्हीं क्षमताओं को जाग्रत किया था जो किसी भी व्यक्ति द्वारा आसानी से जगाई जा सकती हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार और उत्थान में भी गुलेरी जी ने अपूर्व योगदान दिया। वे इस उद्देश्य से नागरी प्रचारिणी सभा के भी विशिष्ट सदस्य रहे। वर्षों तक उन्होंने इस सभा का सभापतित्व किया। उनतालिस वर्ष की आयु में उनका देहांत जयपुर में हुआ। उन जैसे प्रखर, तेजस्वी और तपसाधक व्यक्ति को हिंदी साहित्य में मील का पत्थर कहा जाए तो क्या गलत होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कविता कानन के पारिजात पुष्प महाकवि कालिदास

महाकवि कालिदास द्वारा रचित संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन करने के बाद महायोगी अरविंद ने लिखा है—कालिदास संस्कृत कवितारूपी आकाश के पूर्ण चंद्र हैं। संस्कृत भाषा पर उनका असामान्य अधिकार था। उन्होंने अपनी कविता में सरल, सरस और प्रसंगानुकूल शब्दों का चयन कर ऐसी शब्द योजना की है जैसी आज तक किसी भी भाषा के साहित्य में देखने में नहीं आती। उनकी प्रतिभा विश्वतोन्मुखी थी और कल्पनाओं की पहुँच पृथ्वी, आकाश और पाताल को भी भेदकर उनके पार जाने में सक्षम। उनकी कविता में संक्षिप्तता, गंभीरता और गौरव—ये तीनों विशेषताएँ इतनी प्रचुरता के साथ पाई जाती हैं कि उसकी प्रतिध्वनि पिछले हजार वर्ष से सुनने में नहीं आती।

वह ठीक भी है कि अंतर्जगत के साथ बाह्य जगत का भी अध्ययन कर कवि ने संसार की एक-एक वस्तु में जिस सौंदर्य के दर्शन किए वह हर किसी के बस की बात नहीं है। उनके कविता कानन में सब कुछ सुंदर है। वृक्ष पंक्ति, लता, कुंज, वनराज, मृग और पत्र हर कहीं उन्हें प्रकृति खिलखिलाती दीख पड़ती है और वे इस दर्शन को इतना आत्मविभोर होकर देखने में लीन हो गए कि अपनी सुधि भी भूल गए।

इस उच्चस्तरीय भावस्थिति में अवस्थित रहने के कारण ही वे अपने संबंध में कुछ कह नहीं पाए हों तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। प्रकृति के सजीव सान्निध्य और ईश्वरीय चेतना से सचेतन संपर्क सूत्र व्यक्ति के अपने अहं को क्षुद्र कर दे जो यथार्थत: है भी तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। यही कारण है कि उनके जीवन वृत का कोई क्रमबद्ध विवरण नहीं मिल पाता। उन्हें गुप्तकाल के समकालीन माना जाता है। जितना कुछ उनके संबंध में पता चल सका है, वह इतना ही है कि वे अनाथ, बेसहारा और निरक्षर भट्टाचार्य साथ ही वज्रमूर्ख भी थे।

किंवदंती है कि राजकुमारी विद्योत्तमा अपने समय की प्रकांड विदुषी और शास्त्रों का ज्ञान रखने वाली, प्रतिभाशाली, साथ ही रूपवती, गुणवती और शीलवती महिला थी। ऐसी राजकन्या से विवाह के लिए कई एक राजकुमार उत्सुक थे परंतु विद्योत्तमा की शर्त यह थी कि जो उसे शास्त्रार्थ में हरा देगा उसी से वह शादी करेगी। संयोगवश विद्योत्तमा के मुकाबले में कोई टिक नहीं पाता और शास्त्रार्थियों को अपमानित होकर लौट जाना पड़ता।

ऐसे ही किसी अपमानित विद्वान ने प्रतिशोध लेने के लिए राजकुमारी को नीचा दिखाना चाहा। उन्होंने एक षड्यंत्र रचा जिसके अनुसार किसी वज्रमूर्ख से राजकुमारी का पल्ला बाँधा जाना था। षड्यंत्र का प्रबंध इतनी चालाकी और सावधानी से किया गया कि उसकी असफलता की संभावना ही न रह जाए। षड्यंत्र योजना तैयार हो जाने के बाद उक्त विद्वान किसी वज्रमूर्ख की तलाश में निकले और उन्हें मिल गए कालिदास। कालिदास के व्यवहार, आचरण और काम करने के ढंग से वज्रमूर्खता स्पष्ट झलक रही थी। जिस समय उस विद्वान ने कालिदास को देखा तब कालिदास लकड़ी काट रहे थे। लकड़ी भी ऐसे कि जिस डाली को काटता है उसके ही कटने वाले भाग की ओर बैठे हुए हैं। उन्हें ही पकड़ लिया और षड्यंत्र की शतरंज का मुख्य मोहरा बनाकर राजकुमारी से कालिदास का विवाह करा दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेकिन जब इसका राज खुला कि कालिदास में तो बुद्धि नाममात्र को विकसित नहीं हुई है और पंडितों ने शास्त्रार्थ में हार जाने का प्रतिशोध इस प्रकार लिया है तो बेचारी ने अपना माथा ठोंक लिया। राजपरिवार के सभी सदस्यों को इस तथ्य का पता चला तो उन्होंने अपना सारा रोष कालिदास पर उतार दिया और राजमहल से भगा दिया। इस घटना का न जाने कौन सा प्रसंग कालिदास की अंतरात्मा को छू गया और उन्होंने शिक्षा तथा ज्ञान के महत्त्व को समझकर उसे अर्जित करने में अपने आप को खपा सा दिया।

काली को इष्ट बनाया। उसकी आराधना की। तपश्चर्या और स्वाध्याय से अपनी आत्मा व बुद्धि को शान पर चढ़ाया। इस तप साधना और ज्ञान आराधना का परिणाम यह निकला कि कालिदास वज्रमूर्ख से महाकवि कालिदास बन गए। तप साधना और ज्ञान आराधना दो ऐसे आधार हैं, जिनके द्वारा ही अतीत काल में बालक के व्यक्तित्व का महल खड़ा किया जाता था। गुरुकुल और आश्रम शिक्षा पद्धति का गठन ही इस आधार पर किया गया था कि जिसके सांचे में समाज की उक्त शिक्षण संस्थाओं ने एक से एक बढ़कर व्यक्तित्व ढाले और भारतीय समाज को उन्नति व प्रगति के उच्च शिखर पर पहुँचाया। कालिदास जिन्हें इस वातावरण में पहले रह जाना चाहिए था, परंतु परिस्थितियों के आगे विवश होकर वे ऐसा नहीं कर सके। लेकिन इस अभाव का भान होते ही इसे पूरा करने के लिए निष्ठापूर्वक जुट गए तो कुछ हानि न हो पाई प्रत्युत दूना लाभ ही हुआ, जिसके बल पर उन्होंने महाकवि की ऐसी उच्च उपलब्धि अर्जित की कि उसका सानी पूरे विश्व के इतिहास में नहीं मिलती।

कहते हैं कि विद्वत्ता अर्जित कर लेने पर उनमें स्वाभिमान भी विकसित हुआ और वे पुनः अपनी स्त्री के पास स्वतः नहीं गए। जबकि कुछ लोगों का कहना है कि विद्याध्ययन के बाद कालिदास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वप्रथम अपनी पत्नी विद्योत्तमा के पास पहुँचे थे। उनकी वर्तमान प्रतिभा के संबंध में विद्योत्तमा को कुछ पता तो था नहीं सो राजकुमारी ने पूछा—''अस्ति कश्चिद्वागविशेष: ?'' आपकी वाणी में कोई विशेषता आई। इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने एक-एक शब्द को लेकर तीन महान रचनाएँ—कुमारसंभव, मेघदूत तथा रघुवंश की रचना कर डाली थी। इन तीनों ग्रंथों का आरंभ क्रमश: अस्ति, कश्चित और वाग शब्द को लेकर हुआ है। इस किंवदंती का आधार हो या न हो परंतु इतना निश्चित है कि कालिदास की प्रतिभा छिपी न रह सकी और सभी लोग उनके महत्त्व को समझने लगे थे। विद्या, विभूति और ज्ञान संपदा से संपन्न व्यक्तियों का आदर हर कहीं होता है यह तो निश्चित ही है।

विद्योत्तमा अपने पति की श्रमशीलता और पुरुषार्थ शक्ति को देखकर हतप्रभ ही न रह गई साथ ही उसके हर्ष का पारावार भी न रहा। कालिदास का वर्ण्य विषय प्राय: प्रकृति ही रहा है और प्रकृति की नित नूतनता का गुण उनकी रचनाओं में भी नि:सृत हो उठा। आज भी उनकी रचनाएँ उतनी ही नई हैं जितनी कि उनके समकालीन कवि की सर्वाधिक लोकप्रिय कृति अभिज्ञान शाकुंतल रही है। इस कृति में कथावस्तु की अपेक्षा कवि की प्रखर और पैनी कल्पना शक्ति का ही अधिक चमत्कार हुआ है। मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं को सफलतापूर्वक चित्रित करते हुए एक प्रसंग जिसमें शकुंतला कण्व ऋषि के आश्रम से विदा होती है उस समय आश्रम के वातावरण की शोकविह्वलता का चित्रण किया गया है—इतना मार्मिक बन पड़ा है कि पढ़ते-पढ़ते सहृदय पाठकों की आँखों से आँसू भी आते देखे गए हैं।

पांडित्य और ज्ञान गरिमा से परिपूरित होने के बावजूद भी महाकवि कालिदास पद-पद पर अपनी लघुता और विनम्रता व्यक्त करते रहे हैं। रघुवंश का आरंभ करते समय वे स्वयं अपने संबंध में कह उठे हैं '' कहाँ तो सूर्यवंशी राजा और कहाँ मेरी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छोटी बुद्धि, मेरा यह प्रयत्न ऐसा ही है जैसे कोई छोटी सी डोंगी लेकर समुद्र पार कर जाना चाहता हो। मंदबुद्धि होने पर भी मेरी आकांक्षा काव्ययश प्राप्त करने की है तो लोग यह सुनकर शायद हँसें। मेरी यह इच्छा ऐसी ही है जैसे लंबे कद वाले मनुष्यों द्वारा ही तोड़े जाने वाले फलों को कोई बौना आदमी तोड़ना चाहे।'' यह आत्मकथ्य महाकवि ने भले ही कितनी भी विनम्रतापूर्वक क्यों न कहा हो परंतु प्रतिभा और महानता की पारखी आँखें तो उनकी प्रमाणिकता का एक और संकेत पाकर उन्हें श्रद्धा से नमन करेंगी।

उनकी विद्वत्ता और प्रतिभा से प्रभावित होकर उज्जयिनी के सम्राट विक्रमादित्य ने उन्हें राजकवि की मान्यता दी थी और अपने दरबार में लगभग अपने ही समकक्ष उनका आसन भी लगवाया था। उनकी अधिकांश रचनाओं का प्रथम प्रस्तुतीकरण यहीं हुआ बताया जाता है। जो भी हो, आज न तो विक्रमादित्य हैं और न कालिदास परंतु उस मार्ग की शाश्वतता आज भी उसी तरह प्रामाणिक है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

चालीस वर्ष की आयु में किसी का दूसरा विवाह सुना और देखा गया होगा पर इस दुनिया में जॉर्ज बर्नार्ड शॉ एक ऐसे विलक्षण व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने चालीस पार करने पर ही शादी की और जब लोगों ने इसका कारण पूछा, तो उन्होंने शान के साथ बताया— "लोग काम वासना के लिए शादी करते हैं, कुछ लोग धन के लिए शादी करते हैं। शादी हुई और बच्चों की संख्या बढ़ाई, मुझे यह कुछ पसंद नहीं लगता था। मैं समझता हूँ मनुष्य के लिए जीवनपथ पर एक ऐसे साथी की आवश्यकता होती है जो किसी भी परिस्थिति में अपने शरीर की तरह साथ दे सके। जब तक उसकी आवश्यकता न पड़ी तब तक शादी न की, पर जब मित्र और सहचर आवश्यक हो गया तब शादी की। आप विश्वास कर लेंगे कि चालीस के बाद किसी को काम वासना कम सताती है और तब तक पैसे की दृष्टि से भी मैं खुशहाल हो गया था इसलिए वह भी कारण नहीं बन सकता। "

मनुष्य को भगवान ने बहुत कुछ दिया है। बुद्धि तो इतनी दी है कि वह संसार के संपूर्ण प्राणियों का शिरोमणि हो गया, अन्यथा किसी अन्य ग्रह में बैठा हुआ प्राणी उसे भी एक जानवर समझता होगा। बुद्धि पाकर भी मनुष्य एक गलती सदैव दुहराता रहता है और वह यह है कि उसे जिस पथ पर चलने का अभ्यास हो गया उसी पर चलता रहना चाहता है। रास्ते न बदलने से जीवन के अनेक महत्त्वपूर्ण पहलू उपेक्षित पड़े रहते हैं। भारतीय तत्त्वज्ञान, धर्मदर्शन का प्रादुर्भाव सच पूछा जाय तो जीवन की उलटी धाराओं का अभ्यास करके ही हुआ है। सैकड़ों लोगों ने सामान्य व्यक्तियों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की अपेक्षा कुछ नये पथ विर्निमित कर उनका अभ्यास किया तो तत्त्वज्ञान का एक विशाल भांडागार उपलब्ध हो गया। ऐसे ही लोगों में अभाव के कारण अब नये जीवन की नई दिशाएँ अशोध और अछूती पड़ी हैं।

मनुष्य जीवन में विपरीत और कष्टकर परिस्थितियों से भी गुजरने का अभ्यास बना रहा होता तो अध्यात्म और भौतिकता में पति-पत्नी जैसा संतुलन बना रहता अर्थात मनुष्य अपने लौकिक और पारमार्थिक लक्ष्य को पूरा करता रहता।

हमें नहीं मालूम कि जॉर्ज बर्नार्ड शॉ ने अपने इस उद्देश्य में कितनी सफलता पाई, किंतु उन्हें जीवन में नव-पथ पर चलने की आदत थी और उसी के कारण एक व्यापारी के साधारण पुत्र ने साहित्य जगत का उच्च सम्मान पाया। उन्हें लोग रहस्यवादी व्यक्ति कहा करते थे और वह अपने को एक बच्चे की तरह ही प्रकृति का सरल, सीधा-साधा चितेरा समझते रहे।

जीवन में अनन्यतम सफलताएँ पाने के बावजूद भी उन्होंने अपने कुटुंबियों से कहा—देखो भाई, मेरे दरगाह पर ऐसा कुछ न लिखना जिसे मेरी आत्मा स्वीकार न करती हो, यदि कुछ लिखना ही हो तो सीधे-सीधे लिख देना—''यहीं गाड़ा गया है बर्नार्ड शॉ—न जाने वह बेचारा कौन था।'' यही लिखा भी गया था। बर्नार्ड शॉ कहते हैं—''मैंने अपने हाड़-मांस के शरीर को जाना, किंतु यह न पहचाना कि मेरे भावों को स्पंदन और हृदय को हलचल देने वाला कौन है? जब मैं उसे नहीं जान पाया तो फिर प्रशंसा किसकी लिखाऊँ? शरीर की! ऐसा करके मैं अपनी समूची मनुष्य जाति को झूँठा नहीं बनाऊँगा।''

बर्नार्ड शॉ भी ठीक ऐसी ही प्रकृति के थे। यूरोप में मांसाहार का प्रचलन वैसे ही है जैसे भारतीयों में रोटी और दाल का साधारण आहार। पर बर्नार्ड शॉ ने कभी मांस नहीं खाया। एक भोज में तो उन्हें चुपचाप मांस खिला देने का कुचक्र रचा गया तो बर्नार्ड शॉ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भोज से ही उठकर चले आए। इसी तरह उस पाश्चात्य जीवन में भी उन्होंने अपने आप को शराब, सुंदरी और अभक्ष से बचाकर रखा तथा यह सिद्ध कर दिखाया कि मनुष्य बुरी से बुरी स्थिति में भी अपने आप को शुद्ध और निष्कलुष बनाए रख सकता है, शर्त यह है कि वह अपने सिद्धांत के प्रति पूर्ण निष्ठावान हो।

जहाँ छोटे-छोटे लोग भी अपनी प्रशंसा सुनना चाहते हैं, अपना नाम और जीवन-चरित्र छपा हुआ देखकर प्रसन्न होते हैं, वहाँ बर्नार्ड शॉ ने अपनी परंपरा न्यारी ही रखी। उन्होंने अपने एक निबंध में इस बात को यों साफ किया—"आत्मकथा प्रेरक और कलात्मक होनी चाहिए पर मेरे जीवन में वैसा कुछ नहीं है। मैने किसी की हत्या की नहीं, किसी से बैर बढ़ाया नहीं, न कोई ऐसी घटना मेरे जीवन में घटी जिसे पढ़कर लोगों को रामांस हो। जो कुछ देने की वस्तु थी—(विचार) उसे मैंने पुस्तकों में लिख दिया। मैंने नाटकों में जीवन के अनुकरणीय पहलुओं को उतारकर रख दिया। जो सुनाने योग्य था सुना दिया गया फिर आत्मकथा लिखकर लोगों को क्या पढ़ाऊँ?"

बर्नार्ड शॉ ने यश से अपने को सदैव बचाया तभी वे जीवन में उतना स्वाध्याय और चिंतन कर सके। तुलसीदास की "मान से ज्ञान नष्ट होता है" उक्ति को बर्नार्ड शॉ ने सही तौर पर अपने जीवन में उतारा। लोग साधन-सुविधाएँ होते हुए भी कोई उल्लेखनीय उन्नति इसलिए नहीं कर पाते हैं कि उन्हें काम की कम नामवरी की चिंता पहले होने लगती है और बस बौद्धिक विकास की साधना वहीं ठप पड़ जाती है। व्यर्थ के तानों-बानों में जीवन बीतकर नष्ट हो जाता है। लोकैषणा से बचकर ही बर्नार्ड शॉ अपने जीवन के एक-एक क्षण का सदुपयोग कर सके।

लोग उन्हें विलक्षण और रहस्यवादी व्यक्ति कहा करते थे पर बर्नार्ड बिलकुल साफ व्यक्ति थे। बहुचर्चा का यदि कुछ कारण था तो यही कि उन्होंने कभी भी लकीर का फकीर बनना पसंद नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किया। हर पग को एक नये पंथ का साधक बनाया। बाल्यावस्था में स्कूल में उन्हें अक्षरज्ञान दिया जाता था, पर वे प्रश्न पूछते थे आत्मा संबंधी। मास्टर उन्हें झिड़क देते थे इसलिए बर्नार्ड शॉ को कहना ही पड़ा ''मैं स्कूल में पढ़ने गया था और सब कुछ भूलकर उससे निकला।'' उनका आशय यह था कि मुझे वह शिक्षा दी जानी चाहिए थी जिससे आत्मा के रहस्य ढूँढ़े जाते हैं पर मुझे शाब्दिक ज्ञान में ही फाँसकर रख दिया गया। भोजन के मामले में पहले बता चुके हैं, उन्होंने अपने घर में भी किसी से समझौता नहीं किया। नौकर-चाकर लोगों को बहुत पसंद आते हैं। पर बर्नार्ड ने कहा— ''मुझे आत्मनिर्भर बनना चाहिए, परमात्मा ने यदि नौकर की आवश्यकता समझी होती तो कुछ आदमियों के कई हाथ बनाता जिससे उनकी सेवा की जा सकती। समान साधन देने का यही उद्देश्य है कि अपना काम मनुष्य को स्वयं करना चाहिए।''

जार्ज ने एक बार पिता को शराब पीते देखा तो—टोका! पिताजी शराब पीकर पागल नहीं बनते। पिता ने डाँट दिया तो उसने माँ से शिकायत की। माँ विवश रही पर बर्नार्ड उनका सदैव विरोध करते रहे। जॉर्ज को घूमने के लिए सदैव गरीबों की बस्ती में जाना पड़ता था। लोग गरीबों पर दया किया करते हैं, पर बर्नार्ड ने हमेशा एक ही बात कही—''मनुष्य अपनी दुर्बलता के कारण दीन और दरिद्र बनता है। अपनी भूल का दंड वह भुगतता है तो दूसरा उसके प्रति दयालु क्यों हो? यदि दयालु होना ही है तो सबसे अच्छी बात यह है कि उसे मानवीय दुर्गुणों को छोड़ने को कहा और समझाया जाए।''

अपने संबंध में वह वैसे ही अशांत और दृढ़ निश्चयी थे। वह लेख लिखते थे पर इस दृष्टि से नहीं कि उससे कुछ पैसा मिलेगा। यह विशुद्ध विचार-सेवा की दृष्टि से ही लिखते थे। प्रारंभ के नौ वर्षों में उन्हें लेखन कार्य पर कुल ६ पौंड मिले थे तो भी बर्नार्ड शॉ ने अपने जीवन की स्वाभाविक मस्ती को नहीं छोड़ा। ''पाँच पैसे में कैसे रहा जा सकता है'' नाम की एक पुस्तक खरीद ली थी और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसका उन्होंने पूरा-पूरा लाभ उठाया। कम खरच की जिंदगी और साधन न बढ़ाने के कारण उन्हें अध्ययन के लिए पर्याप्त समय मिल गया और उसी का यह परिणाम था कि उनके विचारों में शनैः शनैः प्रौढ़ता और प्रखरता उतरती गई और लोग बढ़िया परिष्कृत साहित्य बर्नार्ड शॉ से प्राप्त कर सके।

बर्नार्ड शाँ ने यद्यपि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विपदपथ का रसास्वादन किया। कई बार उन्हें विन्स्टल चर्चिल और फ्रेंक हैरस तक की आलोचना करनी पड़ी, पर इसका यह तात्पर्य नहीं कि उनके विचारों में सब उलटा ही उलटा था। बर्नार्ड ने जिन विपरीत परिस्थितियों का आस्वादन किया वह सत्य के प्रति आग्रह था।

जन्म से मृत्यु तक नये-नये आदर्शों के स्तंभ गाड़ने वाले बर्नार्ड ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलताएँ ही पाईं। संघर्षों से घिस-घिसकर उनकी शक्तियाँ उदीप्त ही हुईं, कुंठित नहीं। बौद्धिक दृष्टि से, विचार की दृष्टि से, यश और आर्थिक संपन्नता की दृष्टि से भी वह कभी जीवन में दुखी और अभावग्रस्त नहीं रहे। दुःख तो भावों की अधोगामी स्थिति है, उससे वह विपन्नता के बीच बचे रहे और अंत में शाकाहार की उपयोगिता सिद्ध करते हुए उन्होंने यह दिखा दिया कि स्वास्थ्य और दीर्घ जीवन की दृष्टि से मांसाहार कभी उपयुक्त नहीं। उनका निधन २ नवंबर १९५० ई० में ९४ वर्ष की आयु में हुआ। जीवन के ९३ वसंत देखकर वे विदा हुए।

बर्नार्ड भीतर से भारतीय जीवन की आत्मा थे। जन्म से आयरिश रहे हों उससे क्या बनता-बिगड़ता है? अपने जीवन में उन्होंने सही अर्थों में भारतीय जीवन दर्शन को, आदर्शों को आत्मसात किया था। भले ही उन्होंने इस संबंध में भारतीय धर्मशास्त्र न पढ़े हों, अध्ययन न किया हो, परंतु उनकी जीवन लीला को देखते हुए कोई भी यह नहीं कह सकता कि वे एक भारतीय आत्मा नहीं थे। पग-पग पर अपने कार्यों द्वारा, क्षण-क्षण में अपने जीवन द्वारा उन्होंने भारतीय आदर्शों को ही साधा था। ▣

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कला को जीवंत और व्यापक रूप देने वाले—विलियम शेक्सपीयर

एक बंद लकड़ी के तंबूनुमा कमरे में थियेटर कंपनी का मालिक बैठा सिक्के गिन रहा था और कुछ बडबड़ाता भी जाता। आज का शो एकदम डल गया है—पिछले कुछ दिनों से लोगों का थियेटर में नाटक देखने आना कम हो गया। यह तो स्वाभाविक ही है। कभी थियेटर हाउसफुल जाए तो कभी कलाकारों का खरच निकलना भी मुश्किल हो जाए। परंतु पिछले कुछ दिनों से ऐसा चल रहा था कि थियेटर को जीवित बनाए रखना भी असंभव सा लग रहा था। मालिक को भय था कहीं थियेटर बंद न कर देना पड़े।

तभी किसी कर्मचारी ने उस तंबूनुमा लकड़ी से बने कमरे में प्रवेश किया। मालिक ने उसकी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा और कर्मचारी ने कहा— "साहब आपसे कोई लड़का मिलना चाहता है। कहें तो अंदर आने दूँ।"

"कौन है वह? कहाँ से आया है? क्या चाहता है। तुमने कुछ पूछा उससे? क्या बता रहा है? उसका क्या नाम है?"— एक ही बार में थियेटर के मालिक ने ढेरों प्रश्न पूछ डाले।

पास ही के स्ट्रैटफर्ड गाँव से आया है। पता नहीं उसका क्या नाम है। वह तो बस आप से ही मिलना चाहता है। कर्मचारी बोला।

मालिक को बड़ी झुँझलाहट हुई। फिर भी उसने आगंतुक युवक से मिल लेने में कोई परेशानी अनुभव नहीं की। पता नहीं वह काम का आदमी निकले और बड़े ही ढीले स्वरों में उसने कर्मचारी से कहा—"ठीक है, उसे भेज दो अंदर।" वह कर्मचारी चला गया वहाँ से।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थोड़ी देर बाद बीस-इक्कीस वर्ष के एक किशोर युवक ने उस ऑफिस जैसे कमरे में प्रवेश किया। मालिक जो फिर से अपने काम में लग गया था—ने सिर उठाया और एक नजर में आगंतुक को देखा। अनायास ही उसके मुँह से हँसी फूट पड़ी। आने वाला युवक उसे हँसने जैसा ही लगा था। ढीले-ढाले कपड़े, सर पर एक टोप, वेडौल शरीर और भौंडा चेहरा। आज तक उस मालिक ने भगवान की सृष्टि में ऐसी रचना नहीं देखी थी। अचानक ही ऐसा व्यक्ति सामने आ जाने पर उससे हँसे बगैर नहीं रहा गया, जब उसकी हँसी रुकी तो उसने पूछा, क्या चाहते हो भाई।'

ठेठ ग्रामीण से लगने वाले उस युवक ने इत्मीनान से कहा—'काम'। अपनी हँसी होते देखकर भी वह जरा भी नहीं घबराया था। शायद उसे लोगों के इस व्यवहार का अच्छा अभ्यास रहा था। लंदन जैसे शहर में ठेठ देहाती वेशभूषा पहने उसे देखकर हर कोई हँस देता था। वैसे गाँव में भी हम उम्र लड़के उसका शरीर, आकृति और प्रकृति देखकर मजाक उड़ाया करते थे।

'क्या-क्या काम करोगे तुम,' मालिक ने कहा। जी तो चाहने लगा था इस युवक को थियेटर में विदूषक का अभिनय करने के लिए रख लें। परंतु युवक की पसंद जानना भी आवश्यक था, पता नहीं वह किस तरह का काम करना चाहता है?

'मैं आपके थियेटर में खेले जाने वाले नाटकों में कोई भूमिका निभाने की नौकरी चाहता हूँ।'

और तत्क्षण ही मालिक ने अपने मन की बात उगल दी। देखो भाई। तुम नाटकों के लिए मेरी दृष्टि में किसी अच्छी भूमिका के योग्य तो जंचते नहीं हो। अगर चाहो तो तुम विदूषक का पार्ट खुशी से निभा सकते हो।

'ठीक है साहब'—युवक जैसे पहले से ही यह सुनने और स्वीकार करने के लिए स्वयं को तैयार कर चुका था—'वेतन क्या मिलेगा?'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''अभी तो तुम्हें बतौर परीक्षण के रखा जा रहा है। जीने की आवश्यकताएँ आराम से पूरी होती रहेंगी, इतना ही फिलहाल वेतन समझो। बाद में काम देखकर और बढ़ा भी देंगे।''

उस युवक ने उसी शाम से थियेटर में विदूषक की भूमिकाएँ निभाना आरंभ कर दिया। मसखरेपन के अभिनय में वह इतना सफल हुआ कि चरमराती थियेटर कंपनी सँभल गई, यही नहीं अच्छी आमदनी भी होने लगी। लंदन की जनता में यह नया अभिनेता अपनी अभिनय दक्षता के कारण बड़ा लोकप्रिय हुआ। जैसे-जैसे उसकी लोकप्रियता बढ़ती गयी वेतन और पारिश्रमिक भी अच्छा मिलने लगा। होते-होते पारिश्रमिक का स्तर इतना ऊँचा बढ़ गया कि उसके पास अच्छा पैसा इकट्ठा हो गया। कई नाटक कंपनियों के निमंत्रण उसके पास आने लगे। सबमें जैसे प्रतिस्पर्द्धा चल पड़ी हो कि कौन इस नवोदित अभिनेता को अपनी ओर मिलाने में सफल हो जाए।

उस अभिनेता ने जिसका नाम विलियम शेक्सपीयर था, ने थियेटरों की इस प्रतिस्पर्द्धा का अच्छा लाभ उठाया और काफी पैसा इकट्ठा कर लिया। बाद में वह लॉर्ड चेंबरलेन की ब्लैक फायर कंपनी का हिस्सेदार भी बन गया। शेक्सपीयर को उस समय नाटकों में काम करने के कारण बड़ी ख्याति मिली थी, परंतु वे अमर हुए दूसरे ही कारण से—साहित्य के माध्यम से। उन्होंने विश्व को जो अमूल्य निधि भेंट की—माना जाता है कि वेद व्यास, कालिदास, वाल्मीकि आदि आर्य कवियों के बाद उनके सिवा और किसी ने भी नहीं दी। शेक्सपीयर का नाम कालिदास के समकक्ष है क्योंकि उन्होंने अपनी कला में उसी प्रकार का अनूठापन कायम रखा।

उनका जन्म स्ट्रैटफोर्ड नामक गाँव में इग्लैंड में २३ अप्रैल १५६४ ई० को हुआ। उनके पिता चमड़े और ऊन का व्यवसाय करते थे। परिवार मध्यमवर्गीय स्थिति का ही था—इसलिए उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा गाँव की पाठशाला से आगे न बढ़ सकी। अठारह वर्ष की आयु में ही उनका विवाह छब्बीस वर्ष की आयु वाली ऐन हैथवे से हो गया। वह उम्र में उनसे काफी बड़ी थी। फिर भी दांपत्य जीवन बड़ा प्रेमपूर्ण और मधुर रहा। कई आलोचक तो यह मानते हैं कि उनका विवाहित जीवन दुखी रहा था। परंतु इस संबंध में कोई प्रमाण नहीं मिल सके हैं। उनकी रचनाओं में जहाँ कहीं भी आत्म प्रकाशन हुआ है उससे तो यही लगता है कि पति-पत्नी बड़े प्रेम से रहते थे।

विवाह के एक वर्ष बाद ही उनकी पत्नी ने एक कन्या को जन्म दिया। बाद में दो जुड़वाँ बच्चे और भी हुए। इस प्रकार तीन संतानों के पिता हो जाने के बाद पिता ने कह दिया कि वे अपने लिए रोजगार की व्यवस्था करें। पत्नी बच्चों सहित उनका आर्थिक भार वे नहीं उठा सकते और इसीलिए रोजगार की तलाश में उन्हें लंदन आ जाना पड़ा। लंदन में ये यत्र-तत्र बहुत भटके परंतु काम की कोई व्यवस्था न हो सकी।

उन दिनों लंदन में नाटक—मनोरंजन का प्रमुख साधन था। लोग इन्हें पसंद भी करते थे और थियेटरों में भी दर्शकों की बड़ी भीड़ हुआ करती थी। इधर-उधर भटकते देखकर किसी ने कह दिया कि नाटक कंपनी में भरती हो जाओ। कोई भी तुम जैसे कॉमेडियन को अभिनय के लिए रखने से इनकार नहीं करेगा। और सचमुच कहने वाले की बात सत्य सिद्ध हुई। फिर तो शेक्सपीयर का सितारा ऐसा चमका कि चारों ओर उनके नाटकों की धूम मच गई।

जब भाग्य ने साथ दिया तो उन्होंने नाटक लिखने का भी विचार किया। लंदन में तब रंगमंच की वैसी स्थिति थी जैसी कि अब अखबारों, रेडियो और टेलीविजनों की है। उस समय तमाम राजनीतिक और धार्मिक विचारधाराओं के प्रचार-प्रसार तथा गतिविधियों के विश्लेषण का एकमात्र साधन रंगमंच ही था। उस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समय ब्रिटेन में बड़ी उथल-पुथल मची हुई थी। हेनरी अष्टम की मृत्यु के बाद राजनीति दाव-पेचों का भारी अखाड़ा बनी हुई थी। इधर औद्योगिक क्रांति के कारण पूँजीवाद का भी उदय हो रहा था। इन परिवर्तनों का सारा भार वहाँ की जनता पर पड़ रहा था, फलस्वरूप सर्वसाधारण राजनीति में गहरी दिलचस्पी लेने लगा था। यह रुचि रंगमंच के माध्यम से जितनी तृप्त हो सकती थी उतनी किसी अन्य साधन से नहीं।

शेक्सपीयर ने तत्कालीन परिस्थितियों का निरपेक्ष विश्लेषण किया। यह स्वाभाविक ही था कि रंगमंच के माध्यम से वे अपना दृष्टिकोण जनता के सम्मुख रखते। चूँकि वे आम जनता में से आए थे इसलिए उनका दृष्टिकोण सर्वसाधारण के गले आसानी से उतर भी जाता। उन दिनों अधिकांश नाटक कंपनियों पर रईसों और सामंतों का नियंत्रण था, क्योंकि राजनीतिक हलचलों और सामाजिक गतिविधियों के संचालन व उत्प्रेरणा का यही तो एक माध्यम था। ये रईस और सामंत इस प्रकार जनता को अपने पक्ष में बनाए रखने का प्रयत्न करते रहते।

नाटक लोकप्रिय थे भी और जनता पर प्रभाव डालने वाले भी। इसलिए शासन को सदैव यह भय बना रहता था कि उनके द्वारा जनता को भड़काकर कहीं सत्ता न छीन ली जाए। इसलिए थियेटर, कंपनियों को प्रत्येक नाटक खेलने पर लाइसेंस लेना पड़ता था। तब नाटकों पर सेंसर प्रणाली लागू थी। रानी एलिजाबेथ ने एक थियेटर कंपनी के मालिक को तो उस समय मृत्युदंड ही दे डाला था, जब उन्हें प्रदर्शित नाटक के कुछ अंश आपत्तिजनक लगे थे।

ऐसे वातावरण में अपनी बात को स्पष्ट ढंग से कहने के लिए शेक्सपीयर ने एक अनोखी पद्धत्ति निकाल ली थी। उस पद्धत्ति को समीक्षकों ने अन्योक्ति शैली का नाम दिया है। महाभारत और रामायण के पौराणिक आख्यानों तथा पंचतंत्र और बाइविल की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भाव कथाओं का उन्होंने अद्‌भुत सम्मिश्रण किया और अपनी बात कह डाली। एक तो उनके नाटकों में अनूठापन व विचारों की प्रखर अभिव्यक्ति थी ही दूसरे उनकी भाषा इतनी सरल होती थी कि सीधे दर्शकों का हृदय छू जाती। उनकी लोकप्रियता के ये दो बड़े कारण रहे हैं।

साहित्य के माध्यम से उन्होंने तत्कालीन जनसमाज को एक नई दिशा दी। वे वर्ष भर में तीन-चार ही नाटक तैयार करते। इस प्रकार उन्होंने पूरे जीवन काल में कुल ३५ नाटक और १५४ सोनेंट लिखे। अपने नाटकों में उन्होंने स्थान-स्थान पर संगीत, गीत और अन्य कलाओं का भी समावेश किया। कुल मिलाकर उनके नाटक एक साथ रोचक और प्रेरणाप्रद हुआ करते।

उनकी लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ने लगी। यह कुछ मठाधीश नाटककारों को अखरने लगा। गाँव का एक अनपढ़ आदमी आकर बड़े-बड़े प्रतिष्ठाभिमानियों को पीछे छोड़ जाए, यह उन्हें कैसे सहन होता, फलस्वरूप वे शेक्सपीयर को नीचे गिराने के लिए तरह-तरह के षड्‌यंत्र रचा करते। शेक्सपीयर ने उसकी कभी परवाह नहीं की सदा विरोधियों की उपेक्षा ही करते रहे थे।

सन् १६१० में वे लंदन छोड़कर अपने गाँव वापस लौट आए। उन दिनों लंदन में प्राय: प्लेग फैल जाया करती थी इसलिए पत्नी, बच्चों को उन्होंने सुरक्षा की दृष्टि से वहीं छोड़ रखा था, लगभग पच्चीस वर्ष बाद उन्होंने जब अपने गाँव में प्रवेश किया तो घर की स्थिति काफी बदल चुकी थी। जिन बच्चों को वे वर्ष दो वर्ष का छोड़ गए थे वे भी जवान और शादी शुदा हो चुके थे।

अचानक अपने पिता को वापस लौटा हुआ देखकर बच्चों का—हाँ वे तो अभी भी उनके लिए बच्चे ही थे, हृदय भर आया। शेक्सपीयर ने साथ लाए धन से काफी जायदाद खरीदी और सपरिवार सुखपूर्वक रहने लगे। यह उनके जीवन की सांध्य वेला थी। उनका स्वास्थ्य अब खराब रहने लगा। पूर्व परिचितों के निमंत्रण अभी भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आते, परंतु उन्होंने अब गाँव छोड़कर कहीं जाना ठीक न समझा। उनके कुछ मित्र स्ट्रैटफोर्ड उनसे मिलने के लिए लंदन से आया करते थे।

गाँव लौटने के छह वर्ष बाद १६१६ में उनका देहांत हो गया। मृत्यु के बाद उनका शव गाँव के पास ही गिरजे के कब्रिस्तान में दफनाया गया। उस समय प्रचलित परंपरा के अनुसार लंदन के सभी कलाकारों को वेस्ट मिन्सटर के कब्रिस्तान में दफनाया जाता था। परंतु उनके समकालीन कलाकारों ने शेक्सपीयर को कलाकार माना ही नहीं और उन्हें वेस्टमिन्स्टर में दफनाने नहीं दिया। उस समय तो स्ट्रैटफर्डवासी भी शेक्सपीयर की वास्तविकता से अनभिज्ञ नहीं थे।

वे लोग जिन्होंने शेक्सपीयर के शव को वेस्टमिन्स्टर के कब्रिस्तान में दफनाने से रोका था और स्वयं कलाकार होने का गर्व करते थे। वे अब किसी को याद भी नहीं हैं। उनका नाम किसी को नहीं मालूम, परंतु शेक्सपीयर सदा के लिए अमर हो गए हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महान संगीतकार—बीथोवियन

तुम राजकुमार हो तो कोई बड़ी बात नहीं है। यह एक सहज संयोग है कि तुमने एक राजा के घर जन्म लिया है। किंतु तुम्हारा क्या बड़प्पन है? इस धरा पर सैकड़ों राजकुमार होंगे, किंतु बीथोवियन एक ही होगा।'' अपने अंतरंग मित्र के साथ अनौपचारिक ढंग से कहे गए इन शब्दों के पीछे महान संगीतकार बीथोवियन का अहंभाव न होकर मानव जीवन की सचाई प्रकट होती है कि परम पिता परमेश्वर ने हमें बहुत कुछ दे डाला किंतु वह कोई हमारी उपलब्धि तो नहीं। अपनी उपलब्धि तो वही होगी कि भाग्य ने हमें काँटों पर चलने को पैदा किया है और फिर भी हम दूसरों के लिए सुमन बिखेरते चले जाएँ।

ऊपर वर्णित शब्दों में महान संगीतकार बीथोवियन के व्यक्तित्व और कृतित्व का समग्र परिचय मिल जाता है। उनका जीवन अभाव और कष्टों को ऐसी कहानी है, जिसे श्रोता सुनते-सुनते स्वयं ही रो पड़े। किंतु ऐसे कष्टमय जीवन में भी वह ऐसा संगीत रचता रहा कि आज दो सौ साल पश्चात भी संगीत के क्षेत्र में वह उतना ही लोकप्रिय है जितना कि कोई आधुनिक लोकप्रिय संगीतकार।

पश्चिमी जर्मनी की राजधानी बॉन में सन् १७७० में जन्मे बीथोवियन का युग संगीत के महान कलाकारों के अवतरण का युग था। जब वे हुए तब विख्यात संगीतकार मोजार्ट मात्र सोलह वर्ष के थे और उन्होंने अपने गीत 'वास्टियन और वास्टियने' की रचना कर दी थी। संगीतकार हेडेन की आयु उस समय ३८ वर्ष की थी और वे अपनी प्रसिद्ध सिफिनी 'विदा' की रचना में लगे हुए थे। ऐसे ही समय में बॉन नगर की 'बोनगा से' गली के ५१५ नंबर के मकान की दूसरी मंजिल पर एक नवजात शिशु की 'ऊआ-ऊआ' की गूँज

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुनाई दी। तब किसी ने इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि सदा बीमार रहने वाली माँ और शराबी पिता के घर जन्मा यह शिशु अपने संगीत से विश्व को मोहित कर देगा।

उस युग के सभी संगीतकार अपने साथ सुविधाएँ लेकर उत्पन्न हुए थे किंतु बीथोवियन तो पैदाइशी पीड़ा लेकर आया था। किसी ने सत्य ही कहा है कि कविता और संगीत का जन्म या तो पीड़ा की कोख से होता है या फिर प्रेम के मधुर अंक में। पीड़ा की कोख से जन्मा संगीत अधिक हृदयस्पर्शी और शाश्वत होता है।

बचपन से ही अभाव, पीड़ा और तिरस्कार के बीच पले इस व्यक्ति ने जाने कैसे अपनी उस अंत:शक्ति को पहचान लिया था जो सब कुछ झेलते हुए भी टूटना नहीं जानती थी। घर में तो आश्रय मिल जाना ही बहुत था, कभी दिन अच्छे होते तो पेट की क्षुधा भी शांत हो जाती। रोगिणी माँ उसे अपनी विवशता देने के अतिरिक्त और कुछ भी देने में असमर्थ थी। पिता को तो कमाने और शराब पीने से फुरसत ही नहीं थी।

नन्हें बीथोवियन को इन परिस्थितियों को समझने में अधिक देन न लगी। उसने कारखाने में मजदूरी प्रारंभ कर दी। साथ ही चर्च में बाजा भी बजाता और रात्रि को संगीत सीखता। किसी सुखद समय की यादगार में रखा एक पुराना पियानो तो उसे घर में मिल गया। बीथोवियन उसी पर अभ्यास करता। शराब के नशे में लड़खड़ाते कदमों से उसका पिता घर लौटता और पुत्र को पियानो बजाते देखता तो अकसर उसको मार भी पड़ जाती थी।

फिर भी बीथोवियन अपने जीवन से निराश नहीं होता। बीथोवियन को ऐसा भास होता था कि इस सुख-दु:ख से परे कोई अदृश्य शक्ति है जो लाख दु:ख सहने पर भी मरने नहीं देती। यह अदम्य जिजीविषा हमारे भीतर छिपी किसी सूक्ष्म सत्ता की ही अभिव्यक्ति है। कितना अच्छा हो यदि उस सत्य को संगीत के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया जा सके जो इस जिजीविषा के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

रूप में पुकार-पुकार कर कह रहा है—इस जीवन का कोई महान अर्थ है—महान प्रयोजन है, तभी तो तुम लाख कष्ट सहकर भी जीने के अभिलाषी रहते हो।

कष्टों को झेलते हुए संगीत साधना के सहारे वे संगीत की ऊँचाइयों को छूने और जीवन की उन सचाइयों को संगीत के माध्यम से अभिव्यक्त करने में सफल हुए जो उनका अभीष्ट था। उनके विषय में एक लेखक ने लिखा है—''वह राइन नदी का साहसी पुत्र था, जिसके लिए संसार की हर वस्तु अजनबी (या अछूती) रही, जिसने अपने मन की—अपनी आत्मा की पूरी गहराई के साथ जीने की कोशिश की, जिसने अपने संगीत से एक नए धर्म का निर्माण किया। बीथोवियन के बाद चलने वाले 'कल्ट' को मानने वाले कहते हैं कि उसने सौंदर्य शास्त्र और नीति शास्त्रीय सिद्धांतों को समान स्तर पर लाकर अपने ही जीवन की उच्चता का प्रकाशन किया है। यदि हमें कला और सौंदर्य शास्त्र की अन्य विधाओं में उसी ऊँचाई को प्राप्त करना है तो हमें उसी प्रकार संयमपूर्ण जीवन बिताना होगा जैसे कि बीथोवियन का था और दुःख की उन गहराइयों से गुजरना होगा, जिन्हें बीथावियन ने पार किया था।''

जिस प्रकार उन्हें बचपन में माँ की सेवा और पिता का प्यार नहीं मिला, उसी प्रकार उनका पारिवारिक जीवन भी सुखी नहीं रहा। वे पीड़ाओं के तपते मरुस्थल में नंगे पाँव आगे बढ़ते ही गए। जैसे-जैसे वे पीड़ा की निकटता अनुभव करते, वैसे-वैसे ही उनका संगीत प्राणवान हो उठता। क्योंकि पीड़ा ने उनकी आत्मिक अनुभूति को संगीत के स्वरों में समा देने की क्षमता प्रदान की थी। वे उस शक्ति से परिचित हो चुके थे जो पीड़ा और आह्लाद से परे होती है, वहाँ जो सौंदर्य दीखता है, वही सच्चा सौंदर्य है। बीथोवियन इन्हीं गहन अनुभूतियों के सहारे जिस शक्ति का साक्षात कर चुके थे, उसे ही उन्होंने अपने संगीत में अभिव्यक्त किया था, उसी को भारतीय दर्शन 'आत्मा' कहता है, जो सुख-दुःख से परे शाश्वत है, सत्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महान और अलौकिक संगीत स्रष्टा के रूप में उन्हें जर्मनी में नहीं पूरे विश्व में ख्याति प्राप्त हुई। जगह-जगह उनकी सिफनियों को सुनने के लिए संगीत समारोह किए गए। उन्हें सम्मान मिला, प्रशंसा मिली, पुरस्कार, मिले, बस नहीं मिला तो सुख। आर्थिक कष्ट, अभाव, सहयोगियों-स्नेहियों की कमी यही सब उनके साथ रही थी।

बीथोवियन सदैव इसी आदर्श पर रहे कि सुख आए तो स्वागत, दुःख आए तो स्वागत, सभी परिस्थितियों में समान रहना। दुःख से वितृष्णा नहीं, सुख से प्रसन्नता नहीं। किंतु सुख तो उनके पास फटका ही नहीं, बस दुःखों के झंझावात आते रहे। फिर भी उनका दीप निष्कंप, निर्विकार, भाव से प्रदीप्त होता रहा। और अपने संगीत का प्रकाश फैलाता रहा। उनके संगीत में जीवन के दुःखों को शांति और हर्ष में बदल देने की अद्‌भुत क्षमता उत्पन्न हो गई। उनके संगीत को कई संगीत समालोचक 'मुक्तिदाता' के नाम से संबोधित करते हैं।

उनके प्रेरणा-स्रोत मिश्र के इतिहास प्रसिद्ध एक पिरामिड पर अंकित ये शब्द थे—"मैं ही सब कुछ हूँ, मैं ही था और मैं ही रहूँगा। कोई भी मरणशील प्राणी मेरे स्तर तक नहीं पहुँच सकता।" इन शब्दों में और भारतीय धर्मग्रंथ गीता के शब्दों में अद्‌भुत साम्य है। बीथोवियन अपने आप में उसी आत्मशक्ति की अनुभूति करते थे जो गीता में कही गई है।

अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में वे अपनी श्रवण शक्ति से भी वंचित हो गए थे। एक संगीतकार के लिए इससे बड़ा आघात और क्या हो सकता है कि वह सुन न सके। किंतु प्रकृति ने तो उन्हें अंतःश्रवर्णेद्रियों से सुनाया था। इतने पर भी वे विचलित नहीं हुए, उनकी संगीत साधना को विराम नहीं आया। उनके संबंध में अपने समय की विख्यात संगीत समालोचक बेहिना ब्रेटानो नामक महिला लिखती है—"वह देवताओं का भेजा हुआ एक जादूगर है और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकृतिप्रदत्त अपनी इस शक्ति को वह अपनी कला में प्रयोग करता है।''

अक्टूबर १९७० में बीथोवियन की दो सौ वीं जन्म तिथि सारी जर्मनी में बड़ी धूमधाम से मनाई गई। बीथोवियन महान संगीतकार ही नहीं; महान व्यक्ति थे। उनकी अदम्य जिजीविषा और उसके साथ अभिव्यक्त हुई आत्म-सामर्थ्य हमें जीवन के उस शाश्वत सत्य को पाने के लिए प्रबल प्रेरणाएँ देती रहेंगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वर ब्रह्म के अनन्य आराधक स्त्राविंस्की

हालीवुड के एक प्रख्यात फिल्म निर्माता ने रूस के संगीतकार स्त्राविंस्की से संपर्क साधा। स्त्राविंस्की उन दिनों अमेरिका में ही रह रहे थे। फिल्म निर्माता उनकी ख्याति और संगीत पर अधिकार से असाधारण रुप से प्रभावित था। वह चाहता था कि पश्चिम के जन-जन का यह प्रिय कलाकार उससे अनुबंध कर ले और नियमित रूप से केवल उसी के लिए संगीत रचनाएँ किया करे। स्त्राविंस्की के कक्ष में प्रवेश करते ही फिल्म निर्माता ने जरा सी औपचारिक बातें पूरी कर अपनी मूल बात रखी। ''आप वर्ष में हमें तीन संगीत कृतियाँ दिया कीजिए। हम उसके बदले आपको पारिश्रमिक रूप में एक लाख डालर दिया करेंगे।''

प्रस्ताव था तो बड़ा आकर्षक। फिल्म निर्माता ने सोचा था कि स्त्राविंस्की उसे सुनते ही तत्काल स्वीकार कर लेंगे। परंतु उन्होंने विचार के लिए कुछ समय माँगा। फिल्म निर्माता को बड़ा आश्चर्य हुआ—इतने लुभावने प्रस्ताव पर भी विचार करना पड़ता है। वह बोला—इसमें विचार करने की क्या आवश्यकता है?

स्त्राविंस्की बोले—''मैं यह तै करना चाहता हूँ कि वर्षभर में मैं इतनी संगीत-कृतियाँ तैयार कर पाऊँगा कि नहीं।''

सारे यूरोप भर में जिसकी संगीत क्षमता की तूती बोलती थी, वही अपने संबंध में इस तरह का विचार रखता हो तो यह कम आश्चर्य की बात नहीं है। खैर जो भी हो फिल्म निर्माता उस समय तो वहाँ से उठकर चला गया और दुबारा शाम को स्त्राविंस्की का निर्णय जानने के लिये पहुँचा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस बार तो उसे पूरी आशा थी कि उत्तर संतोषजनक ही मिलेगा। परंतु स्त्राविंस्की ने आशा के प्रतिकूल उत्तर दिया—''देखिए श्रीमान मैं संगीत को कोई पेशा नहीं बना सकता। किसी भी अनुबंध से बँध जाने पर यह तो जरूरी ही होगा कि मुझे कम से कम उतनी संगीत रचनाएँ तो देनी पड़ें। इस अनुबंध के अनुसार मेरा ध्यान संख्या पूरी करने पर ही रहेगा न कि उसे उत्तम कृति बनाने की ओर।''

स्त्राविंस्की की बात एकदम सही थी। फिर भी फिल्म निर्माता को केवल उनका नाम भर चाहिए था। संगीत की गहराईयों को जानने-समझने की क्षमता सर्वसाधारण में कहाँ होती है! केवल स्त्राविंस्की की शोहरत ही फिल्म को चलाने के लिए पर्याप्त थी। फिल्म निर्माता ने कहा—''कृति उत्तम हो या न हो जनता को कोई उसे पहचान-परख थोड़े ही हो सकती है। हमें तो आपकी रचना और नाम भर चाहिए।''

''आपका कहना बिलकुल ठीक है''--स्त्राविंस्की बोले—''परंतु यह बात मेरे सिद्धांत और आदर्श के बिलकुल विपरीत है। संगीत के नाम पर कूड़ा-कचरा देना औरों के लिए चाहे कुछ भी हो परंतु कला के प्रति अवश्य विश्वासघात है और इसके लिए मैं अपने आप को कभी तैयार नहीं कर सकूँगा।''

कुछ और शर्तें होतीं तो शायद फिल्म-निर्माता पारिश्रमिक की रकम बढ़ाने की बात भी सोचता। परंतु आदर्श और सिद्धांतों का सौदा करने के लिए किसी भी स्थिति में तैयार न होने के लिए कृत संकल्प स्त्राविंस्की को अन्य प्रलोभनों से लुभाया जा सकना असंभव ही था। वस्तुतः जो लोग कला साधना, कार्य और कर्त्तव्य के प्रति निष्ठावान तथा ईमानदार होते हैं, वे कला की कभी दुर्गति नहीं होने देते। यह उनकी महानता भी है और कला का सम्मान भी। ऐसे संगीत साधक स्त्राविंस्की को स्वर-ब्रह्म का आराधक कहना अत्युक्ति न होगी। क्योंकि ईश्वर की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अभिव्यक्ति निष्ठा, लगन और ईमानदारी के रूप में ही होती है। स्त्राविंस्की इन तीनों विभूतियों से संपन्न रहे हैं।

लाखों रुपये का प्रलोभन ठुकरा देने वाले स्त्राविंस्की कालांतर में कुछ हजार रुपयों पर एक फिल्म को अपनी संगीत रचना देने के लिए तैयार हो गए। हालाँकि कुछ हजार रुपये भी उन्हें मुश्किल से मिले होंगे। परंतु उन्हें खेद इस बात का ज्यादा रहा कि उस फिल्म में संगीत की भयानक दुर्गति हुई थी। इस दुर्गति ने उन्हें संपूर्ण फिल्म जगत से ही वितृष्ण बना दिया और भविष्य में कभी किसी चित्र को अपना संगीत न देने की कसम खा ली। बाद में उनकी कृतियों के लिए कई बड़े-बड़े प्रस्ताव आए परंतु उन्होंने सबको बिना देखे ही ठुकरा दिया। पूर्व का कटु अनुभव ही उनकी इस निराशा का कारण रहा, जिसके कारण उनकी कला-साधना की उपलब्धियों का उनकी दृष्टि से दुरुपयोग हुआ। एक कला साधक की सबसे बड़ी खूबी यही है कि वह अपनी कला-उपलब्धियों का अपमान-दुरुपयोग होते नहीं देख सकता।

संगीत को व्यवसाय-पेशा न समझकर लोकरंजन और लोकमंगल की साधना समझने वाले इगोर स्त्राविंस्की का जन्म सन् १८८२ में रूस के ओरानियनबाम कसबे में हुआ था। उनके पिता पोलेण्ड से आए थे और सेण्टपीटर्सवर्ग (वर्तमान में लेलिनग्राद) के विख्यात शाही ओपेरा में लोकप्रिय गायक थे। स्वयं उनका संगीत से बड़ा लगाव था—इसके लिए तो वे कानून की पढ़ाई छोड़कर इस क्षेत्र में उतरे थे। परंतु संगीत जगत के अनुभव उनके लिए निराशाजनक ही रहे। पिता की देखा-देखी पुत्र भी संगीत और वाद्य-यंत्रों का अभ्यास करने लगा। फेदोर इग्नातेविच ने इस भय से कि कहीं स्त्राविंस्की को भी यह चस्का न लग जाए और वह अपना जीवन बरबाद न कर ले—बेटे की दिशा को बदलना चाहा। वे उसे वाद्य-यंत्रों से उलझने के लिए मना करने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्त्राविंस्की को तो अब गाने-बजाने में मजा आने लगा था। संगीत के स्वरों ने उनकी आत्मा में प्रवेश पा लिया था। उन्होंने उसकी साधना तो नहीं छोड़ी केवल पिता के सामने ही अभ्यास नहीं करते। अपनी इच्छा के अनुरूप पुत्र को आज्ञा पालन करते देख इग्नातेविच ने स्त्राविंस्की को कानून पढ़ने के लिए छात्रावास भेज दिया। घर पर जो थोड़ी-बहुत पाबंदी थी— भय था, उस भय से वे मुक्त से हो गए। अध्ययन के बाद जो समय बचता उसे वे अपना अभ्यास बढ़ाने में लगाते। मित्रों में बैठकर व्यर्थ गपशप करना उन्हें भाता नहीं था। कानून पढ़ते समय उनका संपर्क सेण्ट-पीटर्सवर्ग में रहने वाले एक प्रख्यात संगीत विशेषज्ञ 'रिस्की कासीकाफ' से हुआ। कासीकाफ का पुत्र स्त्राविंस्की का सहपाठी था। दोनों में अच्छी मित्रता और प्रेम था। इसी मैत्री से वे कासीकाफ तक पहुँचे।

अपनी कुछ छोटी-मोटी रचनाएँ जो स्त्राविंस्की ने की थीं, कासीकाफ को बताईं। वे यद्यपि कोई खास महत्त्वपूर्ण नहीं रहीं । फिर भी उन्होंने इन दोनों के बीच गुरु-शिष्य के संबंध कायम करवा दिए। कासीकाफ स्त्राविंस्की के मार्गदर्शक और शिक्षक बन गए। उन्होंने अपने प्रतिभाशाली और लगनशील शिष्य को शास्त्रीय संगीत तथा अन्य धाराओं के सिद्धांत समझाए और उन्हें तैयार किया।

जब कासीकाफ को विश्वास हो गया कि मेरा शिष्य अब अपनी कला का सार्वजनिक प्रदर्शन करने के लिए योग्य बन चुका है, तो उन्होंने ऐसे अवसर की प्रतीक्षा की। कुछ दिनों बाद उनकी बेटी का विवाह हुआ। इस विवाह में नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति और कई कलाकार उपस्थित थे। अतिथियों और स्वजन बांधवों ने तरह-तरह के उपहार दिए। स्त्राविंस्की ने इस अवसर पर सबसे अनूठा और अद्‌भुत उपहार दिया। अपने गुरु के कहने पर उन्होंने स्वरचित संगीतमय कृति प्रस्तुत की। कृति के स्वर-सौंदर्य ने श्रोताओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर उपस्थित कलाकारों ने एक स्वर के कहा था—यह नवयुवक एक दिन संगीत के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जाएगा।

सार्वजनिक कार्यक्रम में यह स्त्राविंस्की का प्रथम प्रवेश था, जो बड़ा ही आशाजनक और उत्साहप्रद रहा। दीर्घ साधना के बाद प्राप्त उपलब्धियों का उन्होंने सार्वजनिक समर्पण कर दिया।

रूस के विख्यात नृत्य-नाटक कंपनी के संयोजक दियोगलेफ भी जो इस अवसर पर वहीं उपस्थित थे, बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने ने इस युवक कलाकार को कंपनी के एक नाटक का संगीत रचने के लिय आमंत्रित किया। जब यह नाटक मंच पर प्रस्तुत किया गया तो दर्शकों में सबसे आगे बैठे हुए महान संगीतकार क्लाड देबुसी अंतिम परदा गिरते ही मंच की ओर लपके। उन्होंने नये रूसी संगीत स्रष्टा को आलिंगन में भरकर चूम लिया।

स्त्राविंस्की को आरंभ से ही सफलता मिलती रही हो—बात ऐसी नहीं थी। उनकी अचानक बढ़ती ख्याति शीघ्र ही अभिशाप बनकर भी सामने आई। १९३१ ई० में पेरिस की एक कंपनी ने उनकी तीसरी संगीत रचना का प्रदर्शन किया। कुछ लोगों ने जो उनकी प्रसिद्धि से ईर्ष्या करने लगे थे—इस अवसर पर श्रोताओं को उकसाया। प्रस्तुतीकरण के समय बड़ा हा-हा, हू-हू और शोरगुल हुआ। उनके संगीत को अजीब और हास्यास्पद कहा गया-- परंतु वे निराश नहीं हुए। धैर्यपूर्वक वे अपनी रचना प्रस्तुत करते रहे। कार्यक्रम बड़ी मुश्किल से पूरा हो सका लेकिन बाद में उनकी और भी छीछालेदर हुई— यह स्थिति हतोत्साहित करने के लिए पर्याप्त थी। यूरोप और रूस में भी उनकी विरोधी हवा बहने लगी।

स्त्राविंस्की को इसकी आशा नहीं थी। परंतु उनको विरोध की कोई चिंता नहीं हुई। वे जानते थे कि प्रतिभाओं को आरंभ में नहीं तो कुछ समय बाद ठोकरें अवश्य खानी पड़ती हैं। ये ठोकरें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही उनके विकास और उच्चता को एक सुदृढ़ आधार प्रदान करती हैं। इस विरोध का कारण यह था कि उन्होंने संगीत को सर्वथा एक नई व सार्थक दिशा दी थी। उन दिनों यद्यपि ऐसे संगीतकारों की कमी नहीं थी जो उस धारा के प्रतिनिधि न कहे जाएँ फिर भी उनका क्षेत्र सीमित और व्यक्तित्व प्रभावहीन था।

संगीत को मात्र मनोरंजन और विलासिता का माध्यम समझने वाले ही इस क्षेत्र पर छाए हुए थे। चूँकि आरंभ से ही स्त्राविंस्की ने नये प्रतिमानों की सृष्टि की थी इसलिए उनका विरोध अस्वाभाविक भी नहीं था। भावोत्तेजक और सात्विक प्रेरणाओं के जागरण में उनका संगीत एकदम सफल होता था। ध्येय और लक्ष्य के प्रति ईमानदार स्त्राविंस्की को उसी सफलता और उसके आधार ने धैर्यवान तथा दृढ़ बनाए रखा। सत्प्रयास में एक शक्ति होती है जो प्रयत्नकर्त्ता को स्थिर और विरोध झंझावतों में भी बरगद की तरह खड़ा रहने की शक्ति देते हैं।

बरसों तक वे इस हवा में भी यूरोपीय देशों में घूमते रहे। आखिर विजय उन्हीं की हुई, इन यात्राओं ने उन्हें सर्वप्रिय कलाकार बना दिया। स्त्राविंस्की को एक-एक नई रचना के लिए बरसों समय लग जाता था। वे ६-६ वर्ष तक प्रयत्न और श्रम करते रहते। जब तक अपनी कृति से उन्हें संतोष नहीं हो जाता उसे वे कभी सार्वजनिक मंचों तक नहीं जाने देते। पूरे जीवन काल में उन्होंने साठ से अधिक रचनाएँ की हैं और वे सब की सब लोकप्रिय हुई हैं। ऐसे श्रमशील और आत्मतुष्ट व्यक्ति के लिए संगीत व्यवसाय कैसे बन सकता है?

परंतु उनकी जीविका का साधन भी संगीत ही था। पारिश्रमिक के रूप में उन्होंने जो कुछ कमाया है, वह शायद ही किसी अन्य संगीतकार ने कमाया हो। लेकिन उन्होंने इसका उपयोग अपने लिए सीमित मात्रा में ही किया। जीवन भर वे आठ फीट लंबी आठ फीट चौड़ी कोठरी में रहे। छोटा सा कमरा ही उनका शयन कक्ष,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परामर्श-चर्चा और भोजन कक्ष सब कुछ था। छोटे मकान का उपयोग उन्होंने मितव्ययता और सादगी की दृष्टि से ही किया। आवश्यकता भर अपने लिए रखकर शेष सब भी उनके साध्य लोकमंगल की साधना में लग जाता।

१९३० में वे स्थायी रूप से कैलिफोर्निया में रहने लगे। इसके पूर्व उन्होंने विश्वभर के कई देशों की यात्राएँ कीं और संगीत को कला के रूप में प्रतिष्ठित किया। उन्हें अपना आदर्श मानने वाले संगीतकारों की संख्या आज हजारों में है। १९६२ में वे पुनः एक बार अपनी मातृभूमि रूस में लौटे उस समय रूसवासियों ने उनका भव्य स्वागत किया।

सवा पाँच फीट लंबे छरहरे बदन के स्त्राविंस्की ने दीर्घकाय और मोटे पेट के व्यवसायी संगीतकारों के सम्मुख अपनी स्वर ब्रह्म आराधना से अनुकरणीय आदर्श रखा है कि संगीत साधकों को अपनी साधना व्यावसायिक दृष्टिकोण से परे रखकर कलात्मक दृष्टिकोण से जारी रखनी चाहिए। इसी प्रकार वे अपने कलाकार को जीवित और जाग्रत रख सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बंकिमचंद्र—जिनकी कृति 'आनंदमठ' अमर हो गई

'महेंद्र गीत सुनकर कुछ विस्मित हुए। समझ में नहीं आया कि सुजला, सुफला मलयज शीतला, शस्य श्यामला माता कौन है, उन्होंने पूछा माता कौन? बिना उत्तर दिए ही भवानंद गाते रहे।..... '

'महेंद्र बोले— यह तो देश है या नहीं।'

'भवानंद ने कहा—''हम लोग और कोई दूसरी माँ को नहीं जानते—**जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी**। हम कहते हैं—जन्मभूमि ही माता है। हमारी न कोई माँ है, न बाप, न भाई, न बंधु, न पत्नी, न पुत्र, न घर, और न द्वार। बस यही एक माँ है जिसकी हम आराधना करते हैं।''

तब महेंद्र ने बात को समझकर कहा—''तो फिर गाओ। और भवानंद ने फिर गाया।''

यह अंश है—बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की उस अमर कृति का। इस स्थल पर संन्यासियों का गाया हुआ गीत मातृभूमि की राष्ट्रीय वंदना बन गया। आनंदमठ के संबंध में स्वयं बंकिम बाबू ने एक बार कहा था—''इसको छोड़कर मेरा सारा लेखन कुएँ में डाल दो। वन्दे मातरम् महान है, यह देश के हृदय पर राज्य करेगा और इसमें देश की जनता पागल होकर नाच उठेगी।''

शायद ही किसी साहित्यकार ने अपनी किसी रचना के प्रति इतने दृढ़ विश्वास के साथ कोई भविष्यवाणी की हो। आनंदमठ की रचना ने उन्हें रवींद्र और शरत की पंक्ति में ला बिठाया। और अपने समय में आनंदमठ क्रांतिकारियों के लिए एक ऐसा प्रेरणा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गीत बना रहा जिसकी कोई मिसाल ही नहीं है। उपन्यास ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है।

बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय का जन्म सन् १८३८ में हुआ था और यह उपन्यास लिखा गया था सन् १८७१ से ८० के बीच। तब स्पष्ट ही है कि यह उपन्यास उस समय सन् सत्तावन में लड़े गए स्वतंत्रता संग्राम के मूल में कार्य कर रही भावनाओं की अभिव्यक्ति रही थी। अठारह सौ सत्तावन की क्रांति बंकिम बाबू के युवा हृदय ने अपनी आँखों से देखी था। उस समय अंगरेज सरकार ने जो क्रूरतापूर्ण दमनचक्र चलाया था उससे अंगरेजों की शक्ति का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता था। इसलिए आवश्यकता अनुभव हुई ऐसी कृति की जो जन भावनाओं को उभार दे और लोकमानस हुँकार उठे।

यही कारण है कि बंकिम बाबू ने भारतीय जनता के संस्कारों में नस-नस में बसी मातृशक्ति की प्रतिष्ठा को स्पर्श किया। देश की जन्मभूमि को माँ के रूप में उभारा। आनंद मठ का प्रारंभ मातृ प्रसंग तथा उपसंहार भारत माता की प्रतिष्ठा है। उपन्यास का कथानक सौ वर्ष पूर्व के कालक्रम से आरंभ होता है—सन् १७७० ई० से। तब बंगाल में मीर जाफर का राज्य था और मीर जाफर अंगरेजों के हाथ की कठपुतली बना हुआ था।

सन् १७७० ई० में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा। दो वर्ष से वहाँ फसल बिगड़ रही थी। १७६८ में तो पानी ही नहीं गिरा उस साल सरकार ने किसानों की दुर्दशा की भी उपेक्षा करते हुए लगान की पाई-पाई वसूल की। उस वर्ष तो खाद्य स्थिति थोड़ी ठीक ही होती, यदि सरकार लगान वसूल न करती। परंतु मीर जाफर को प्रजा की स्थिति से क्या लेना-देना था, उसे तो अपना घर भरने और धन बटोरने से मतलब था। इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों को फाकाकशी करनी पड़ी। इसके एक वर्ष बाद थोड़ी बारिश हुई परंतु कुँवार और कार्तिक में फिर सूखा पड़ा। उस साल भी तमाम फसलें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिगड़ गई और नौबत यहाँ तक आ पहुँची कि अच्छे-अच्छे धनपतियों और किसानों के यहाँ दोनों टाइम फाकाकशी चलने लगी ।

सरकार को इस समय राहत देनी थी परंतु उसने तो आँख मूँदकर लगान एकदम दस प्रतिशत बढ़ा दिया और बंगाल में हाहाकार मच गया। लोग गरीब तो थे ही, दो-दो वर्ष का दुर्भिक्ष और ऊपर से निर्मम शोषण अच्छे-अच्छे धनपतियों को कंगाल बना गया। सत्ता को तो इन बातों से कुछ लेना-देना था ही नहीं, उसे तो चाहिए था कर के रूप में अपना तथाकथित स्वत्व। धनाढ्य वर्ग के लोगों ने भी भीख माँगना आरंभ कर दिया। गत दो वर्षों से गरीब भी इसी उपाय से जी रहा था। जिसके पास पैसा था, थोड़ी-बहुत संपत्ति थी और हृदय में करुणा जागी थी उन्होंने अपना सब कुछ लुटा दिया। अब उनके लिए भी पेट व रोटी की समस्या आड़े आ गई वे भी कहाँ से दें बेचारे। जब भीख नहीं मिली तो जनता भूखों मरने लगी और ऐसी ही स्थिति में फैल गई महामारी। बुखार, हैजा, तपैदिक और चेचक सभी रोग फैलने लगे। घर-घर लोग मरने लगे। कोई किसी को पानी तक नहीं पिलाता था। जानते सभी थे कि इस स्थिति में हमारे जीवन का अंत निश्चित है फिर भी जब तक साँस है, तब तक आस के अनुसार कोई किसी को छूता नहीं था।

तत्कालीन शासकीय अधिकारियों ने इस स्थिति का पूरा लाभ उठाया। जिनके पास साधन थे उन्होंने अपार संपदा इकट्ठी कर ली। यहाँ तक कि लोगों की बहू-बेटियों को भी खरीदा। जिनके पास कुछ नहीं था, केवल था तो नारी तन और सतीत्व, तो प्राण रक्षा के लिए वही बेच दिया। जीवन सर्वाधिक प्रिय वस्तु है। राई भर भी बचने की आशा दीखने पर कोई न कोई उपाय तो विवश होकर करना ही पड़ता है। अधिकांश लोग तो अन्न के अभाव में घास-पत्ते खाने लगे। बहुत से भाग निकले परंतु बच वे भी न पाए। कईयों ने तो जंगली पशु-पक्षी और कुत्ते-बिल्ली भी मारकर खा लिए। यहाँ तक कि कईयों को तो नर-मांस से भी हिचकिचाहट

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नहीं हुई। परंतु सरकार निरपेक्ष और मूक दर्शक ही बनी रही। किया कुछ तो यही कि किस प्रकार लोगों से बकाया लगान वसूल किया जाए।

कहना नहीं होगा कि अकाल की भयावह स्थिति में बहुत बड़ा कारण शासन की यह निर्दय नीति रही थी। ऐसे समय में कई लोग तो विवश से हो काल के ग्रास बन गए थे। तब बंगाल के कतिपय संन्यासियों ने मुसलमानों और अंगरेजों के विरुद्ध आवाज उठाई थी। सशस्त्र क्रांति का मार्ग अपनाने की ठानी थी। इन संन्यासियों का एक ही मंत्र था—यद्यपि हम लोगों को संसार से कुछ लेना-देना नहीं है। फिर भी जहाँ भय व विद्वेष की विनाश लीला होती हो, उसे परास्त करना हमारा धर्म कर्त्तव्य है।

पूर्णिया, तिरहुत तथा दिनाजपुर में इस क्रांति की ज्वाला भड़की थी। इतिहास के उसी रोमांचकारी अध्याय को आधार बनाकर बंकिम बाबू ने आनंदमठ की सृष्टि की। संन्यासियों की सशस्त्र क्रांति का आधार था कि सरकार इस स्थिति के लिए बहुत अंशों में जिम्मेदार है तो आनंदमठ की संतानों की मान्यता रही। राजा का पूना के साथ समन्वय तो यह है कि वह रक्षा करे परंतु हमारे राजा रक्षा कहाँ कर रहे हैं? वे तो धर्म, जाति, मानकुल सब कुछ छीनने पर उतारू हैं। अब प्राण ही जाना बाकी है। प्राण तो वैसे भी जाएँगे और ऐसे भी इसीलिए क्यों न पुण्य के रास्ते पर चलकर हम अपना बलिदान करें।

आनंदमठ में एक स्थान पर अपना परिचय देते हुए एक संन्यासी कहता है—हम लोग संतान हैं। पूछा जाता है किसकी? तो उत्तर मिलता है—माँ की। माँ तो एक ही है जन्मभूमि। इसलिए उपन्यास के एक पात्र को जो अभी संतानों के संपर्क में आया था और उसने संन्यासियों को एक बैलगाड़ी लूटते हुए देखा था, पूछा—संतान क्या चोरी-डकैती से माँ की पूजा करती है। यह कैसी मातृशक्ति है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तब एक संतान कहता है—'हम चोरी-डकैती नहीं करते हैं।'

'अभी तो एक बैलगाड़ी लूट ली आप लोगों ने यह डकैती नहीं तो क्या है।'

'वह चोरी-डकैती है क्या। वह तो आपद् धर्म है। बताओ तो भला किसके रुपए थे?'

'राजा के थे'—नवागत व्यक्ति बोला—'राजा के क्यों। इन रुपये पर राजा का क्या अधिकार?'

'यह राजा का राज भोग है।'

'जो राजा राज्य का पालन नहीं करता उसे राज्य की जनता से संपत्ति लेने का कोई हक नहीं।' अधिकार और कर्त्तव्य का सामंजस्य दरसाते हुए बंकिम बाबू ने उस स्थल पर स्पष्ट कह दिया संतान के मुँह से कि जो शासन सौंपे गए दायित्व को पूरा नहीं करता और सब उपाय कर लिए गए हों उससे अपने दायित्व का निर्वाह करवाने के लिए तो नि:संकोच किसी भी प्रकार से उसके हाथ से अधिकार छीन लिया जाना चाहिए। यह बिलकुल भी अनुचित और अधार्मिक नहीं।

विनोबा भावे जैसे अहिंसा के पक्षधर और गांधी जी के उत्तराधिकारी तक ने २५ जनवरी १९५० को पवनार में भाषण देते हुए कहा था—''समाज रचना बदलने के लिए हिंसा करनी पड़े तो भी सद्गुण मर गया कहकर चिल्लाते मत रहिए। बुरी रचना नष्ट हुई इतना ही समझिए। उसके लिए जो हिंसा करनी पड़ी वह साधारण हिंसा नहीं थी। वह ऊँचे स्तर की हिंसा थी, वह भी एक सद्गुण थी। निरुपाय होकर केवल विशेष प्रसंग के लिए हमें अन्य साधनों का उपयोग अनुचित नहीं मालूम होता।''

निरुपाय दशा में ही बंकिम बाबू ने आनंद मठ की संतानों को सशस्त्र क्रांति के मार्ग पर लगाया तो उससे मातृभक्ति या संन्यास निष्ठा को कोई हानि नहीं पहुँची बल्कि उसकी विशेषता में तो अभिवृद्धि ही हुई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आनंदमठ अहिंसक सत्याग्रहियों तथा क्रांतिकारियों दोनों के लिए ही प्रेरणा का स्रोत बना रहा। बंकिम बाबू ने बड़े प्रभावशाली ढंग से इसमें कहा मातृभूमि की वंदना-साधना के लिए तत्पर जनों को सभी प्रकार के मोह बंधनों और माया के प्रलोभनों से दूर रहना होगा। हालांकि वे नहीं मानते कि माया काटना इतना आसान है इसलिए संत लोग केवल व्रत धारण करते हैं कि जब तक हमारा ध्येय पूरा न हो जायेगा, तब तक पत्नी, बच्चों और परिवार वालों से नहीं मिलेंगे। संन्यासी- सर्वत्यागी बनकर रहेंगे। जो भी कुछ उपार्जित करेंगे वह अपने लिए या अपने नाते-रिश्तेदारों के लिए नहीं रखेंगे सब इस सत्कार्य में समर्पित कर देंगे।

१७७० के बंगाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर बंकिम बाबू ने तत्कालीन संदर्भ में 'आनंदमठ' लिखा। इस उपन्यास को लिखने में काफी समय लगा और यह १८८० में 'बंग दर्शन' नामक पत्रिका में धारावाहिक रूप से प्रकाशित होने लगा। तब लोगों में बंग दर्शन को आनंदमठ के कारण इतनी लोकप्रियता मिली थी कि उसकी ग्राहक संख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई।

जून १८८२ ई० में आनंदमठ की अंतिम किस्त निकली 'बंग दर्शन' में और उसी वर्ष यह पुस्तक रूप में भी प्रकाशित हो गया। देखते ही देखते आनंदमठ के कई संस्करण निकल गए। लोकप्रियता की दृष्टि से आनंदमठ तब से लेकर अब तक भारतीय साहित्य में अनूठा ही रहा है। इस उपन्यास के गीत 'वन्दे मातरम्' को सर्व प्रथम गाया विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने। जिसने भी रविबाबू के मुँह से यह गीत सुना, वह मंत्रमुग्ध हो गया और अनुभव करने लगा कि उसने मातृभूमि का साक्षात्कार कर लिया है।

यह उपन्यास और गीत जैसे-जैसे लोकप्रिय होते गए वैसे-वैसे भारतीय जनता के हृदय में देशभक्ति की भावनाएँ उभरने लगीं। योगी अरविंद और स्वामी विवेकानंद से लेकर महात्मा गांधी तथा सुभाषचंद्र बोस ने 'वन्दे मातरम्' गाया। विभिन्न विरोधी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारधाराओं के व्यक्ति होते हुए भी सबका लक्ष्य तो आखिर एक ही था—स्वतंत्रता। शहीदों ने फाँसी के तख्ते पर चढ़ते समय 'वन्दे मातरम्' गाया, क्रातिकारी अपनी गुप्त बैठकें संतानों के स्वर में गाकर आरंभ करते थे। सशस्त्र-क्रांति का प्रेरणा बिंदु भी यही गीत रहा। कांग्रेस के मंचों से भी 'वन्दे मातरम्' की उद्घोषणा हुई, सेवादलों ने भी आनंदमठ का मूल बिंदु पकड़ा ।

अंगरेजों को जब यह पता चला कि भारतीयों में जाग्रत हो रही देशभक्ति तथा स्वतंत्रता प्रेम का प्रेरणा स्रोत 'आनंदमठ' और उसका एक गीत है तथा उन्हें इस गीत की शक्ति का परिचय मिला तो कूटनीति से इसे नष्ट करने का कुचक्र आरंभ किया। अंगरेजों ने चाल चलकर मुसलिम मनोवृत्ति के कुछ तत्त्वों को हवा दी और ऐसे तत्त्वों ने आवाज उठाई कि इस गीत में चूंकि संस्कृत शब्दों की बहुलता है इसलिए यह सांप्रदायिकता का प्रतिनिधित्व करता है। कभी जिन्ना ने भी इस गीत को गाया था और अपने हृदय में देशप्रेम को उमड़ता पाया। उसी गीत को सांप्रदायिक घोषित किया गया।

'आनंदमठ' के प्रति भी यही हवा चली। स्मरण रखा जाना चाहिए कि जिस समय का चित्रण है इस उपन्यास में उस समय बंगाल में मुसलमानों का राज्य था। मुसलमान अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बने थे। चोर-चोर मौसेरे भाई की तरह बंकिमबाबू ने संतान संप्रदाय के माध्यम से तत्कालीन शासन तंत्र का बड़ी निर्भीकता से परदाफाश किया था। मुसलिमों के प्रति घृणा उत्पन्न करने का उद्देश्य उनका कभी नहीं रहा। फिर भी 'जाकी रही भावना जैसी' के अनुसार कुछ लोगों को आनंदमठ और उसका गीत आपत्तिजनक लगा, उन्होंने सार्वजनिक आयोजनों के अवसर पर वन्दे मातरम् न गाने देने का तथा आनंदमठ पर आक्षेप किया। फिर भी २६ जनवरी १९३७ ई० को कांग्रेस कार्यकारिणी ने वन्दे मातरम् के प्रथम दो पद गाए जाने का निर्णय लेकर समझौतावादी रवैया अपनाया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आनंदमठ के माध्यम से बंकिम बाबू ने एक व्यवहार्य क्रांतिकारी योजना प्रस्तुत की थी। देशवासियों ने उसे अपनाया भी सही। आनंदमठ की सभी संतानें गृहस्थ थीं परंतु मातृभूमि की रक्षा के लिए संन्यासियों का वेश धारण किये थीं। उन्होंने कह भी रखा था कि जब हमारा कार्य पूरा हो जाएगा तो हम वापस पारिवारिक उत्तरदायित्व ओढ़ लेंगे। आनंदमठ से प्रेरणा लेकर भारतीय क्रांतिकारी स्वातंत्र्य-संघर्ष में भाग लेने वाले योद्धा वेश से भले ही संन्यासी नहीं बने हों, रहन-सहन और मनोवृत्ति से तो सन्यासी बन ही गए थे। स्वतंत्रता का लक्ष्य प्राप्त करने तक पारिवारिक जिम्मेदारियों की भी किसी को चिंता नहीं रही। भारतीय जनता पर आनंदमठ के प्रभाव से भयभीत होकर अंगरेजी सरकार ने उसे ज़ब्त करने की भी योजना बनाई थी। परंतु दृष्ट रूप में यह एक इतिहास था जो साहित्यिक ढंग से लिखा गया था। आनंदमठ को जब्त करने का सरकार कोई बहाना नहीं ढूँढ़ सकी।

हाँ! वह इसके विरोध में हवा अवश्य बनाती रही। १९३७ में फिर इसके विरुद्ध तूफान उठा। ४८ और ६१ में भी अंगरेजों के मानसपुत्रों ने आनंदमठ के मंत्र पर आपत्ति की। स्वतंत्र भारत में इस पर विचार करने हेतु संपूर्णानंद कमेटी का गठन किया। संपूर्णानंद शिक्षा कमेटी की रिपोर्ट में सुझाव दिया गया कि विद्यार्थियों को यह मंत्रोपम गीत अवश्य ही याद होना चाहिए।

विश्व भर के साहित्य में आज तक वह गौरव किसी को प्राप्त नहीं हुआ जो आनंदमठ को हुआ। २४ जनवरी १९५० को संविधान परिषद् के अध्यक्ष ने कहा—"इस रचना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एतिहासिक भूमिका निभाई है। वन्दे मातरम् को जन-गण-मन के समान आदर देना चाहिए। आनंदमठ जैसी रचनाएँ देश और समाज को बदलने की क्षमता रखती हैं। परन्तु खेद है कि आज ऐसी कृतियों का एक दम अभाव है—जबकि कहने को भारतीय भाषाओं में प्रति वर्ष प्रचुर साहित्य छपता है।" ▣

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असफलताओं के काँटों में खिला एक फूल—शॉपेनहॉवर

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जर्मनी के आदर्शवादी दार्शनिक हीगेल की दीवानी थी—समूची जर्मनी जनता। उस समय हीगेल ने जर्मनी शासन तंत्र और समाज व्यवस्था की तारीफ में जो प्रशंसा के पुल बाँधे थे, उसके कारण चाहे जो भी रहे हों, तत्कालीन सरकार उनसे बड़ी प्रसन्न थी। कुछ लोग जो उनके विरोधी थे, वे उनको नौकरशाही के हाथों की कठपुतली दार्शनिक भी कहा करते थे। परंतु इन संबोधनों का वैसा ही प्रभाव हुआ जैसा कि चंद्रमा को चुनौती देने वाले जुगनुओं का।

हीगेल के विचार जनसामान्य की पहुँच से परे थे। लोग उन्हें भले ही न समझ सके—फिर भी बुद्धिमान और प्रतिष्ठित तबका उनका प्रशंसक था, तो सर्वसामान्य भी उनका ही अनुसरण करता। वे अपने समय में अपनी विचारधारा के लिए विवादास्पद रहे हैं। कहा जाता है कि उनके विचारों को केवल एक ही व्यक्ति ने थोड़ा-बहुत समझा और ग्रहण किया—परंतु वह भी गलत अर्थों में। इसलिए उनकी आदर्शवादी धारणाओं से साम्यवाद जैसी वस्तुनिष्ठ भौतिकवादी विचार सारणी का निरसन हुआ। उनके विचारों को समझने या न समझ पाने वालों की संख्या चाहे जो रही हो फिर भी उनके संपर्क में जो भी आया, वह उनसे निरपेक्ष नहीं रह सका—फिर चाहे वह समर्थक बन गया हो या विरोधी। विरोधियों की संख्या का ही पलड़ा भारी था। विरोधी थे भी गिने-चुने और वे भी विचारों की निष्पक्ष समीक्षा नहीं करते वरन आलोचना ही अधिक करते थे । इस कारण वे टिक भी नहीं पाते थे। ऐसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्थिति में नये ही नियुक्त होकर आए। बर्लिन विश्व विद्यालय के एक युवा दार्शनिक ने उनके विचारों का गहन विश्लेषण किया और उन्हें निराधार—निरी कल्पना कहा तो अंधसमर्थकों में रोष फूट पड़ा। हीगेल की एक मान्यता यह थी कि विचार तत्त्व ही वास्तविक जगत का निर्माण करता है। जबकि इस युवा दार्शनिक का कहना था कि वस्तु जगत का निर्माण विचारों के साथ-साथ संघर्ष पर निर्भर करता है। अपने इस विचार की व्याख्या में उसने कहा भी है कि मस्तिष्क को उन्नत बनाने और नया सृजन करने के लिए असफलताएँ तथा संघर्ष नितांत आवश्यक हैं। उनके अभाव में आदमी अस्थिर ही रहता है। इसलिए कुछ भी बनने के लिए आवश्यक है—कष्ट उठाना और पीड़ाएँ झेलना।

यह मतभेद तो उक्त दार्शनिक तथा हीगेल के अंतर्विरोध का अंशमात्र है। उन दोनों की विचारधाराएँ परस्पर एक-दूसरे की प्रतिद्वंद्वी ही रहीं और इसलिए युवा दार्शनिक को हीगेल का विरोधी होने के कारण बर्लिन विश्वविद्यालय से उखड़ जाना पड़ा। वे विश्वविद्यालय की नौकरी से हटा दिए गए। इससे पूर्व उनके पास हीगेल का समर्थन करने के लिए भी प्रस्ताव आए परंतु उन्हें अपने विवेक पर उतना विश्वास था कि वे यह समझौता करने के लिए तैयार न हुए। इसे आत्मविश्वास की पराकाष्ठा और स्वविवेक की दृढ़ता का प्रतीक ही कहना चाहिए। अपने सिद्धांतों के लिए अपनी सुविधाओं को गौण महत्त्व देने वाले उस युवा दार्शनिक का नाम था—शॉपेनहॉवर। जर्मनी जनता ने शॉपेनहॉवर को उस समय भले ही अपने हृदय में प्रतिष्ठा नहीं दी हो परंतु आगे चलकर उनकी ख्याति देशकाल की सीमाओं को लाँघकर विश्वव्यापी और चिरंतन हो गई।

विवेक के प्रति आस्था और निज के पुरुषार्थ से ख्याति तथा सम्मान को प्राप्त करने वाले इस दार्शनिक महापुरुष को अपने जीवन काल में निरंतर संघर्ष झेलना पड़े। उनका जीवन—उनके

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिद्धांतों की प्रयोगशाला बन गया और उस प्रयोगशाला में उन्होंने सिद्ध कर दिखाया कि संघर्ष, पुरुषार्थ और तप-त्याग के बिना इस जगत में कोई भी स्थायी उपलब्धि अर्जित नहीं की जा सकती। जीते जी शायद ही किसी महापुरुष को सम्मान मिला हो? जीवन काल में तो महामानवों को सदैव उपेक्षा, तिरस्कार और प्रताड़नाएँ ही मिली हैं। उनका मूल्यांकन तो तब होता है, जब उनकी स्मृति ही शेष रह जाती है।

जर्मनी के डेनर्जिन शहर में शॉपेनहॉवर का जन्म २७ फरवरी १७८८ ई० को हुआ था। उनके पिता एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। व्यापार जैसे व्यवसाय में रहते हुए भी उनके पिता के व्यक्तित्व में कुछ ऐसी विशेषताएँ थी जिन्हें आज के चालाक व्यवसायी कमियाँ ही बताएँगे, लोग समझते हैं कि व्यापारी का पहला गुण होता है—झूठ और फरेबी। घटिया वस्तु को बढ़िया बताना और एक के दस वसूल करना—व्यापारी पिताओं का एक ऐसा सूत्र है जिसे मरते समय भी वे अपने पुत्रों को गाँठ से बाँध लेने के लिए कह जाना चाहते हैं। स्वस्थ दृष्टिकोण से तो यह एक अवगुण और दोषपूर्ण नीति है, परंतु न जाने किस लोभ के प्रलोभन से व्यापार जगत में इसे स्वर्ण सूत्र समझा जाने लगा। शॉपेन हॉवर के पिता में यह अवगुण अथवा होशियारी रंचमात्र को भी न थी और वे सत्यनिष्ठा को ही सर्वश्रेष्ठ जीवन नीति मानते थे। दूसरी विशेषता उनमें यह थी कि वे किसी की पीठ पीछे निंदा करने की अपेक्षा मुँह पर ही कुछ कह लेना अच्छा समझते थे। इस कारण उनसे शत्रुता रखने वाले भी मुँह देखी बात करने वालों की अपेक्षा कुछ अधिक थे। जो लोग उनकी इस विशेषता को समझ जाते वे शीघ्र ही उनके मित्र भी बन जाते।

सत्यनिष्ठा और स्पष्टवादिता—ये दो गुण शॉपेनहॉवर को अपने पिता से विरासत में मिले थे। उनकी माता एक लेखिका थी। दिन-रात अध्ययन करना और लिखना ही उनकी प्रमुख चर्या थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रगति और विकास की दिशा में यह मनोयोग प्रशंसनीय तो है परंतु जब यह अपने निकटस्थ और परिवार के लोगों की उपेक्षा तक बढ़ जाता है तो निंद्य स्वार्थ ही बन जाता है। माँ की लेखन-रुचि निंद्य स्वार्थ की सीमा को लाँघ चुकी थी। शॉपेनहॉवर उनके अपने बेटे थे और जब उन्होंने लेखन की ओर रुचि लेना आरंभ किया तो माँ ने प्रोत्साहन देने की अपेक्षा उन्हें निरुत्साहित ही किया। महत्त्वाकांक्षा विकृत होकर कभी-कभी तो घृणित रूप धारण कर जाती है। माँ होते हुए भी उन्होंने अपने बेटे को निरुत्साहित किया जो यह सिद्ध करता है कि उनका लेखन साधना नहीं स्वार्थ का साधन बन गया था और उस क्षेत्र में वे अपने किसी भी निकटतम को प्रतिद्वंद्वी के रूप में देखना पसंद नहीं करती थी।

जिस समय उनका प्रथम ग्रंथ 'आंन दी फोर फोल्ड रुट ऑफ द सफिशियेण्ट रीजन' प्रकाशित हुआ, उस समय वे साहित्य जगत के नये ही प्रवेशार्थी थे। फिर भी परिश्रम और मनोयोग द्वारा यह ग्रंथ तैयार करने के कारण उन्हें येना यूनिवर्सिटी ने डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। उस पहली सफलता से शॉपेनहॉवर का आत्मविश्वास खूब बढ़ा और उन्होंने सोचा कि माँ यह जानकर प्रसन्न होगी। हालाँकि मन में संदेह का अंकुर भी सिर उठा रहा था फिर भी उसकी एक प्रति लेकर अपनी माँ के पास पहुँचे और ग्रंथ उन्हें दिखाते हुए बोले, "माँ देखो इस ग्रंथ पर मुझे डॉक्टरेट की उपाधि मिली है। आप इसे जरा देखना और अपनी प्रतिक्रिया बताना।"

कुछ दिनों बाद शॉपेनहावर प्रतिक्रिया जानने के उद्देश्य से माँ के पास पहुँचे तो देखा कि ग्रंथ जहाँ का तहाँ रखा था। शायद उसका मुख पृष्ठ भी नहीं खोला गया था। शॉपेनहॉवर को देखते ही माँ ने कहा "मैंने तुम्हारी दी हुई पुस्तक पढ़ ली है। किस सिर-फिरे ने तुम्हें इस पर डॉक्टरेट दिया है। मेरी समझ से तो यह किताब दवा बेचने वालों के लिए पुड़ियाएँ बांधने काम में ही आएगी।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उलटी प्रतिक्रिया का संदेह तो था, परंतु वह इतनी तीखी होगी—इसकी आशा भी नहीं की थी, वे उबल पड़े और बोले— ''माँ तुम अपने आप को समझती क्या हो? इसे लोग उस समय भी अपने पास रख रखेंगे जब तुम्हारी किताबों को कवाड़ी की दुकान में रखने के लिए भी जगह नहीं रहेगी।''

माँ की ओर से ऐसा हतोत्साहन मिलने पर शॉपेनहॉवर का झुँझला उठना अनुचित भी नहीं था। उनकी माता अहंकारी स्वभाव की थी इस कारण उसकी अपने पति से भी नहीं बनती थी। दोनों पिता-पुत्र में अच्छी बनती और पिता शॉपेनहॉवर को प्राय: ही हर समय अपने साथ रखते। पिता को लंबे समय तक व्यापार के काम-काज के सिलसिले में बाहर और विदेशों में भी रहना पड़ता। शापेनहॉवर भी उनके साथ रहते और किशोरावस्था में ही उन्होंने कई देशों को घूम डाला। इन यात्राओं में उन्हें कई बद्धिजीवियों का संपर्क मिला। पिता ने जर्मनी में शिक्षा दिलाने की अपेक्षा बाहर देशों में पढ़ाना अधिक उचित समझा और शॉपेनहॉवर ने जर्मनी के साथ-साथ फ्रांस तथा इग्लैंड में अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी की।

सन् १८०३ में उन पर एक भीषण वज्रपात हुआ जिस समय वे कैशोर्य की वयसंधि पार कर रहे थे कि उनके पिता ने अपने तनावग्रस्त जीवन से मुक्ति पाने के लिए आत्महत्या कर ली। एक सहारा था—वह भी टूट गया । माँ से तो कोई आशा की नहीं जा सकती थी फिर भी आशा की एक क्षीण ही सही रश्मि तो दिखाई दे रही थी, वह थी मातृत्व वत्सल हृदय। उसी रश्मि के विश्वास पर शॉपेनहॉवर अपनी माँ के पास पहुँचे, परंतु वहाँ से दो टूक जवाब मिला—मैं तुम्हें अपने साथ नहीं रख सकती। लगता था महत्त्वाकांक्षा के उन्माद ने मातृत्व को भी रौंद डाला था। हॉवर अपना सा मुँह लेकर रह गए।

ऐसे समय में उनका एक मित्र बहुत काम आया। उसने शॉपेनहॉवर को अपने साथ रखा और विश्वास बँधाया। निर्वाह तो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेहनत-मजदूरी द्वारा चलाने लगे परंतु इस वय की संवेदनशीलता को कटु-स्मृति दंशों ने गहरा आघात पहुँचाया। आत्मविस्मरण के लिए वे पुस्तकों में डूबने लगे और अध्ययन द्वारा आत्मोन्मुख हुए। इन्ही परिस्थितियों ने उनके मन में दर्शन शास्त्र के प्रति गहन अभिरुचि जाग्रत कर दी। पांच-छह वर्षों तक अंधकारपूर्ण भविष्य के थपेड़ों में भटकते हुए वे वर्तमान के प्रति आश्वस्त हो सके और १८०९ में कार्टिजन विश्वविद्यालय में भरती हो गए। वहाँ उन्होंने दर्शन शास्त्र की विभिन्न विचारधाराओं का अध्ययन किया—प्लेटो, कांट, अरस्तू, स्पिनोजा आदि दार्शनिकों के विचारों ने उन पर गहरा प्रभाव डाला।

जिन दिनों वे अध्ययन कर रहे थे, उनका व्यक्तित्व एकाकी होता जा रहा था। माँ की ओर से निराशा, परिस्थितियों के थपेड़े, और यथार्थ की कटुता—कुल मिलाकर इन सब बातों से उनका जीवन दर्शन एक प्रयोगशाला बन गया। दर्शन के संबंध में पाश्चात्य और पौर्वात्य—भारतीय धारणाओं में बड़ा अंतर है। पश्चिमी परिभाषा के अनुसार दर्शन का अर्थ जीवन का दृष्टिकोण होता है। जीव जीवन के दृष्टिकोण से तात्पर्य निश्चित और पूर्व निर्धारित स्थूल मान्यताओं का अध्ययन है। जबकि भारतीय धारणा दर्शन को तत्त्व चिंतन, परम सत्य की खोज और मूलतत्त्व की शोध के अर्थों में ग्रहण करती है। इस प्रकार भारतीय धारणा, पश्चिमी मान्यता की अपेक्षा अधिक गंभीर और चिंतनपरक है।

शॉपेनहॉवर अध्ययन के साथ-साथ चिंतन तथा शोध की ओर भी उन्मुख होते जा रहे थे। अत: उनका झुकाव अनजाने ही भारतीय दर्शन की ओर बढ़ता गया। उन्हीं दिनों प्रकाशित हुई उनकी प्रथम पुस्तक—'ऑन द फोर फोल्ड रूट ऑफ द सफीशियण्ट रीजन' यह पुस्तक प्रसिद्ध कवि तथा दार्शनिक गेटे के हाथों में भी पहुँची। गेटे भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन कर चुके थे। एक ही दृष्टि में उन्होंने इस युवक की प्रतिभा को तौल लिया। अनुमान लगाया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कि थोड़ा प्रयत्न किया जाय तो यह प्रतिभाशाली दार्शनिक पाश्चात्य दर्शन को गंभीर उपलब्धियाँ भेंट कर सकता है।

गेटे ने शॉपेनहॉवर से संपर्क साधा और उन्हें भारतीय दर्शन शास्त्रों—मूलत: वेदांत तथा उपनिषदों का अध्ययन करने की सलाह दी। स्वयं के अनुभवों का उल्लेख करते हुए उन्हें गेटे ने प्रेरित व प्रोत्साहित भी किया। शॉपेनहॉवर ने सर्वप्रथम उपनिषदों का अध्ययन किया। सचमुच उन्हें वे रत्न मिले जो उनकी आशा से कई गुना अधिक मूल्यवान थे। अब तो उनकी अभिरुचि और भी बढ़ी तथा उन्होंने वेदांत पर भी उपलब्ध ग्रंथों का अध्ययन कर डाला।

उनकी मृत्यु बड़े आकस्मिक ढंग से हुई। एक दिन वे प्रात:काल उठे, नित्यक्रिया से निवृत्त होने के बाद चाय पी और उसके कुछ देर बाद ही प्रयाण कर गए, लेकिन अपनी स्मृति के रूप में उन्होंने जो प्रतिमान छोड़े हैं, वे उनकी उपस्थिति का आभास आज भी कराते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भारतीय चित्रपट के प्रवर्तक दादा साहब फालके

दादा साहब फालके के मन में विचार आया—फिल्म व्यवसाय विदेशियों के हाथ में है। इनका उद्देश्य विशुद्ध व्यावसायिक है। लोगों के मनोरंजन हेतु पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति पर आधारित मनोरंजन के चित्र ही इनमें दिखाए जाते हैं। पश्चिमी सभ्यता के अश्लील कामुक और स्टेट चित्रों से हमारे देश के युवक-युवतियों और जनता पर कुप्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। अतः हमें इस व्यवसाय का भारतीयकरण करना चाहिए। भारतीयकरण होने से इसे समाज शिक्षण और समाज में विचारशीलता उत्पन्न करने का माध्यम बनाया जा सकता है। देश को दिशाएँ दी जा सकती हैं जिससे हमारा देश, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक विकास की ओर अग्रसर हो सके।

उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि इस दिशा में उन्हें सुदृढ़ता से प्रयत्न करना है। किंतु इस कार्य के लिए विस्तृत अध्ययन, गहन चिंतन और जानकारियों की आवश्यकता पड़ेगी। भारी धनराशि इस महान कार्य के लिए चाहिए। सब ओर दृष्टि दौड़ाई और क्रमबद्ध रूप से अपना जीवन उसमें खपा देने को प्रस्तुत हो गए।

कार्य प्रारंभ करने से पूर्व जिसके बिना कुछ भी नहीं किया जा सकता फालके साहब पहले उसी में लग गए। उन्होंने विचारा—विस्तृत अध्ययन किए बिना, अध्ययन के पश्चात चिंतन के माध्यम से सूत्र खोजे बिना, हमारी कल्पना मात्र शेखचिल्ली की कहानी बनकर रह जाएगी। विचारे हुए मार्ग पर चल पड़ें। चित्रपट निर्माण पर ढूँढ़-ढूँढ़कर उन्होंने पुस्तकों का गंभीर अध्ययन किया। अध्ययन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और चिंतन के साथ-साथ उनका निश्चय दृढ़ होता गया और आत्मविश्वास जाग्रत होने लगा। अध्ययन चिंतन के साथ ही इस कार्य का क्रियात्मक अध्ययन भी वे सिनेमा देखकर करने लगे। दिनभर अध्ययन और रात्रि में सिनेमा देखकर अपने सूत्रों का तुलनात्मक अध्ययन नियमित चलता रहा।

उच्च आदर्श पर चलने वाले के मार्ग में भी बाधाएँ आती हैं। उनके उद्देश्य पूर्ति में जो विघ्न उपस्थिति होते हैं, उनसे हताश नहीं होते हैं। उनसे प्रेरणा लेकर दुगने उत्साह से अपने लक्ष्य की पूर्ति में जुट जाते हैं।

दादा साहब के दिन-रात के परिश्रम से उनकी आँखों में व्रण हो गए और उनकी आँखें जाती रहीं। जीवन में अंधकार छा गया। निराशा भर गई और सोचने लगे कि अब सारा जीवन ही व्यर्थ हो गया। किंतु पुरुषार्थी की भगवान सहायता करते हैं, ऐसा विचार जब उनके मन में आया तो अपनी निराशामय भावनाओं पर उन्हें बड़ी ग्लानि हुई। वे विचारने लगे कि निराशा से तो अकर्मण्यता आती है। प्रमाद, आलस्य और निष्क्रियता इस निराशा से ही उत्पन्न होते हैं। हमें हिम्मत नहीं हारना चाहिए, प्रयत्न करना चाहिए। भगवान के अनुदान के रूप में मिले नए उत्साह ने फालके को साहस से भर दिया। वे नए सिरे से चिंतन करने लगे, उन्होंने उत्साह और साहस के साथ आँखों की चिकित्सा आरंभ कर दी।

दादा साहब की सहायता भगवान ने सत्प्रेरणा, उत्साह एवं साहस के रूप में तो की ही, उन्हें एक योग्य डाक्टर के संपर्क का भी लाभ प्राप्त हो गया। पूर्ण आशा और विश्वास के साथ उन्होंने आँखों का आपरेशन कराया। नेत्र विशारद डॉ० प्रभाकर के द्वारा किए गए आपरेशन से उनकी दृष्टि लौट आई। उनका जीवन एक बार फिर प्रकाश से जगमगा उठा, आशाओं से भर गया।

उन्हें अपना कार्य आगे बढ़ाने के लिए अब साधन के रूप में धन की आवश्यकता थी। धन थोड़ा नहीं कम से कम पच्चीस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हजार रुपये चाहिए। इतना धन जुटाना भी एक महान तपस्या थी फालके साहब जैसे मध्यम श्रेणी के व्यक्ति के लिए। नियमित अपने लक्ष्य पर लगे रहने के कारण उनकी स्वयं की कोई आशा नहीं रह गई थी। घर की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं व्यवस्था उनकी पतिपरायण पत्नी कभी-कभी गृहस्थी की अनावश्यक वस्तुएँ बेचकर करती आ रही थी। ऐसी स्थिति में इतना धन एकत्रित करना भी एक दुष्कर कार्य दिखाई दे रहा था।

उन्होंने राजा, महाराजाओं, पूँजीपतियों, स्वदेशी और छोटे-छोटे व्यवसाय चलाने वाले सभी से चर्चाएँ कीं और अपनी योजना समझाकर इस व्यवसाय के लिए धन लगाने का अनुरोध किया, किंतु नई-नई योजना होने से सभी ने संदेह किया कि यह योजना सफल न हो सकेगी और कोई भी इसमें धन लगाने को आगे नहीं आया। उलटे सबने इन्हें सनकी, अर्द्ध विक्षिप्त और मानसिक विकृति से पीड़ित घोषित करने का प्रयत्न किया। उनके आत्मीय और घनिष्ठ मित्रों तक ने उन्हें प्रोत्साहन नहीं दिया।

पहले तो वे बड़े निराश हुए। उन्हें अपने ही व्यक्तियों द्वारा हतोत्साहित किए जाने पर बहुत क्षोभ हुआ। किंतु अपने लक्ष्य पर दृढ़ फालके फिर विचार करने लगे कि हम अपने से ही कार्य प्रारंभ करें। पहले स्वयं ही पूरे प्रयास करेंगे। बचे हुए के लिए दूसरों के सामने समस्या रखेंगे। उन्होंने वही किया अपनी बीमा की पालिसी गिरवी रखकर पंद्रह हजार रुपये प्राप्त किए। फालके साहब को अपना सर्वस्व दाँव पर लगाते देखकर उनकी योजना पर कुछ सहयोग देने के लिए भी कुछ लोग प्रस्तुत हो गए।

धनराशि की व्यवस्था होते ही सन् १९१२ में फालके साहब इग्लैंड गए। वहाँ से उन्हें चित्रपट की सामग्री क्रय करनी थी और जो सिद्धांत उन्होंने निश्चिय किए थे उनका अनुसंधान भी करवाना था।

कैमरा में फिल्म भरना, उसकी गति का प्रमाण बिगड़ने पर सुधार की प्रक्रिया आदि उन्हें वहाँ के विक्रेताओं से सहज में ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कैमरा क्रय करते समय ज्ञात हो गया। अब शूटिंग का प्रत्यक्ष अनुभव करना, जो एक दुष्कर कार्य था, शेष रह गया। इंग्लैंड में स्टूडियो में प्रवेश पाना सामान्य अंगरेज को भी संभव न था फिर वह तो भारत एक शासित देश के नागरिक थे। उन्हें स्टूडियो में पहुँच पाना महान कठिन दिखलाई दे रहा था।

दादा साहब को विस्तृत अध्ययन और व्यावहारिक ज्ञान से मार्ग मिल गया। कौनसा कैमरा क्रय किया जाय, इस विषय की जानकारी प्राप्त करने के लिए, परामर्श करने के लिए वे फिल्मी पत्र 'वाइसकोप' के कार्यालय में गए। संपादक से जो चर्चा हुई उससे वह फालके साहब से अत्यंत प्रभावित हुआ। उसे यह आश्चर्य हुआ कि उन्होंने मात्र किताबें पढ़कर कल्पना के आधार पर इतना ज्ञान प्राप्त किया है। उसे इनकी लगन पर विश्वास हुआ और ऐसे लगनशील, व्यक्ति को सहयोग देना उसने अपना कर्त्तव्य माना। संपादक ने ''हेपवर्थ' सिनेमा कंपनी के मैनेजर को फोन करके इन्हें प्रत्येक वस्तु विवरण सहित दिखाने का आग्रह किया।

हेपवर्थ सिनेमा कंपनी के मैनेजर ने दादा साहब का स्वागत किया, सम्मानपूर्वक शूटिंग दिखाई और इससे संबंधित उनकी प्रत्येक जिज्ञासा का समाधान किया। उन्हें अपने हाथ से शूटिंग करने का भी अवसर प्रदान किया।

फालके साहब की यह अनुभूति अब दृढ़ होती जा रही थी कि जो अपनी सहायता आप करते हैं, दैवी सहायता उन्हें अपने आप सुलभ होती जाती है।

विलियम्सन कैमरा और अन्य आवश्यक सामग्री लेकर दादा साहब भारत लौट आए। एक मास की स्वल्प अवधि में ही उन्होंने दो सौ फीट की प्रायोगिक फिल्में बना डालीं। इन फिल्मों को देखकर उनके उन मित्रों को भी अब विश्वास हो गया जो पहले इनकी खिल्ली उड़ा रहे थे। उन्होंने यह अनुभव कर लिया कि भारत में अब चित्रपट बन सकते हैं और फालके साहब उसे बना सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फालके साहब के प्रयोगों को देखकर एक और सेठ पूँजी लगाने को प्रस्तुत हो गए। इनके पुरुषार्थ पर प्रसन्न होने से भगवान का एक और अनुदान उन्हें मिला।

पूर्ण तैयारी के साथ कार्य प्रारंभ किया और मात्र छह महीने में 'राजा हरिश्चंद' नाम की ३७०० फीट लंबी लगभग एक घंटा चलने वाली भारतीय कथा रूपी चित्रपट फिल्म का प्रदर्शन किया गया 'यह भारतीय चित्रपट व्यवसाय का जन्मदिन था।'

कठिनाइयों ने फालके साहब का पीछा नहीं छोड़ा। सन् १९१४ में प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ हो गया। विश्व युद्ध का व्यावसायिक क्षेत्र में व्यापक प्रभाव हुआ। चित्रपट उद्योग भी उससे प्रभावित हुए बिना न बच सका। यह व्यवसाय तो था ही अभी शैशव अवस्था में, सो लड़खड़ा गया।

अबकी बार फालके साहब को बहुत धक्का लगा। निराशा में डूब गए। उनके सामने कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। काम बंद करने को विवश होना पड़ रहा था। इस बार उनकी धर्मपरायण पतिभक्ता पत्नी ने उन्हें बल दिया। अपने समस्त स्वर्ण आभूषण देकर उसने समझाया कि इनकी उपयोगिता ऐसे कठिन अवसरों पर उपयोग कर लेने में ही है। इनको पहनकर शरीर की सुंदरता बढ़ाने में इनकी सार्थकता नहीं है। कठिन समय पर काम आने के लिए ही ऊँची धनराशि लगाकर इन आभूषणों को बनाया जाता है। यदि ऐसे अवसर पर भी इनकी उपयोगिता न ली जा सकी तो उस धनराशि का दुरुपयोग ही समझा जाएगा। फिर भक्त जब तक अपनी पूरी शक्ति नहीं लगा देता, अपना सर्वस्व बलिदान नहीं कर देता भगवान अपनी सहायता का हाथ नहीं बढ़ाता, अतः आप इस धन से कार्य करें।

इस धन व कलाकारों के सहयोग से लंका-दहन चित्र पूरा हुआ। इस चित्र का बड़ा सम्मान हुआ। फालके साहब की व्यवसाय में साख जम गई और स्थायित्व आ गया। दादा साहब ने और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फिल्में भी बनाई जिनमें कई वृत्त चित्र और शैक्षणिक चित्र थे। गंगावतरण उनका प्रथम और अंतिम टाकी फिल्म थी, जिसका बहुत आदर हुआ। सारे देश में टाकी फिल्म बनाने पर फालके को बधाईयाँ मिलीं और पैसा उनकी सफलता पर अभिवादन के रूप में बरस पड़ा।

दादा साहब फालके ने देश को एक नया उद्योग ही नहीं दिया, देश की सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के अपने आदर्श को बनाए रखा। शैक्षणिक और वृत्त चित्र के साथ ही उन्होंने जो चित्र बनाए उनमें भारतीय आदर्शों को प्रधानता दी।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org